सकारात्मक स्पंदन पुष्टि राधा कृष्ण अंक - तृतीय

Vibrant Pushti

जय श्री कृष्ण

पलकें न चाहे खुलना

श्यामा श्याम की लीला बिराजत

अंतर मन से सबको नाच नचावत

आनंद आनंद उत्सव तनमें उजावत

खेलें प्रीत की रीत

बावरा हो गया तन मन मेरा

सुधबुध खोयी जीवन जागा

आत्म से परमात्मा समायी

हे श्याम! अब न पलक खोलाई।

"Vibrant Pushti"

धीरे धीरे दोनों के नयन स्थिर हो गये और स्थिर नयनों से एक प्रकाश फैलने लगा यह प्रकाश से दोनों में जागृतता जागने लगी।

कान्हा कहने लगा राधे! यह जगत में मनुष्य जन्म सर्वस्व है। जितनी भी इन्द्रियां है उनका सत्य माया को समझकर काम वासना को भगाना है, माया को समझकर माया का परिवर्तन करना है।

यह नयन से पहले कर्ण को समझना है, क्यूंकि मुख्यता कर्ण से नयन, नयन से मुखडा, मुखडा से गंध याने नासिका, नासिका से पूरा तन।

मनुष्य जीवन में जो भी कुछ स्पर्श होता है वह इनसे ही होता है। तो यह स्पर्श कैसे करना अति योग्य है। हर स्पर्श से ही योग्य पहचान होती है।

प्रीत की रीत भी ऐसी ही है। हम प्रीत करते है तो हमारे नयनों से हमने जो ऐहसास किया है वह हमारे रोमे रोम में यह देखने से ही अजीब असर हो गयी। यह असर कैसी है वह हमारे इरादा पर आधारित है। आज जगत में कहीं कहीं प्रेम की परिभाषा अलक अलक रीत से करते है और तन मन धन से दुखी होते है, अगर सच्ची प्रीत है तो न दुख और न दूर होना होता है। सांसारिक विचार और रिवाज से हर जीव तत्व भटक जाता है, कहीं प्रकार की वृत्तियां सर्व प्रकार से बरबाद कर देती है, चाहे कितनी भी भौतिक आबादी हो। कहीं जीव अपनी अधिक भौतिकता आधारित कहीं कुकर्म और दुष्कर्म करते है वह रोगी और अधोगति में जीवन व्यतीत करते है।

प्रीत का मुख्य सिद्धांत जुडना ही है बिछडना नहीं है। प्रीत तो अमृत है, मधुर है, अदभुत है, सुंदर है, संस्कृत है, आनंद है जो केवल परमानंद से ही ऐकात्म करता है। जिसके लिये श्रीप्रभु भी तरसते है, दौडते है, तपश्चर्या करते है।

कान्हा की ऐसी बातें सुनकर राधाजी अत्यंत आनंदित हो गई। जो उनके आत्मा में अनुभूति हो रही थी वह कान्हा के मुख से कर्ण द्वारा रोमे रोम में कान्हा को बसा रही थी।

कैसी दोनों की अनुभूति!

कैसी दोनों की प्रीत रीत!

कैसी दोनों की ऐकात्मता!

अभी भी दोनों ऐक ही नजर से जुडे थे, स्थिर थे। न कोई पलकें मटकती थी। इतने में राधाजी की चुदंडी उड कर कहीं दूर जाने लगी, कान्हा की नजर हट कर चुदंडी की तरफ दौडी और वह दौडा। दौडते दौडते कहीं वनस्पतियों के झुंड से लपक कर पकड लिया, और मुस्कुराते राधाजी की तरफ आया और राधाजी को औढाया।

यह औढाते राधाजी की नजर कान्हा के पैर पर पडी, तो कहीं कंटक कान्हा के पैर में चुभ गये थे और खुन बह रहा था, जो कान्हा को मालूम न था और वह तो चुदंडी पाने की खुशी में मुस्कुराता था।

"Vibrant Pushti"
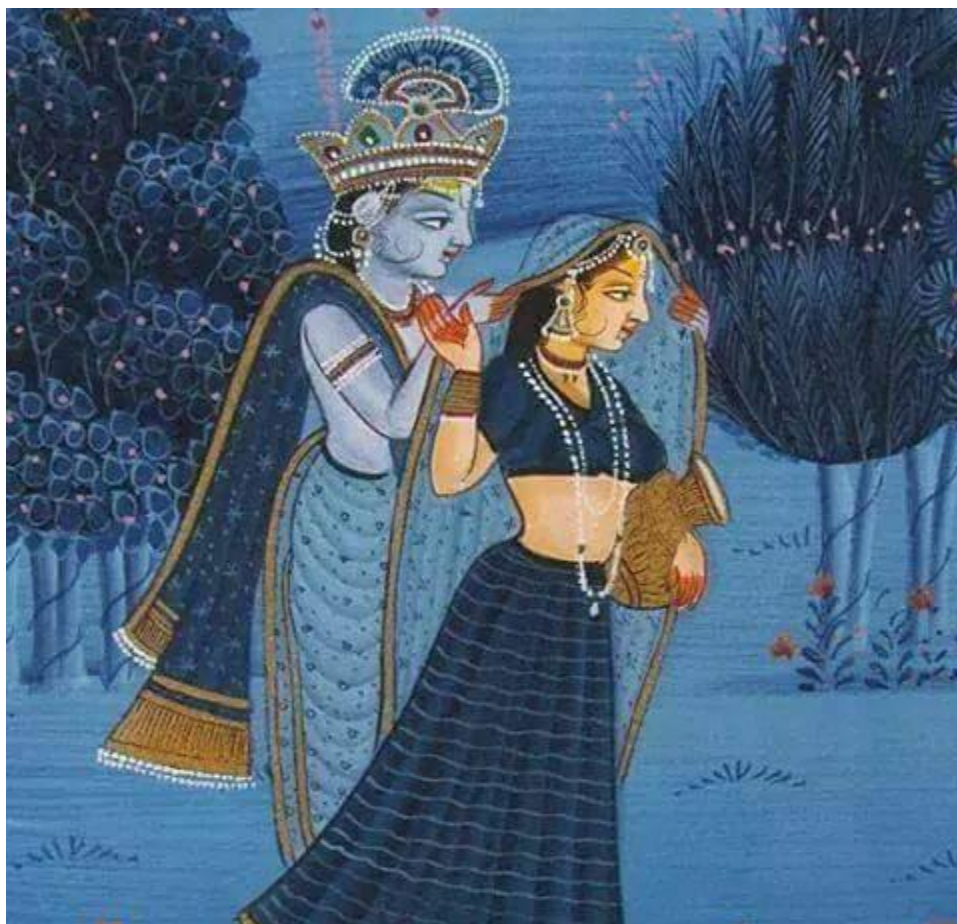
जन्म और मृत्यु "श्री प्रभु" ने अपने हस्तक रखा है। वह कितने मायालु है। हमें हर प्रकार का मौका देते है और कहते है कि थोडा जीवन भी सिद्धांत से जीये जाय तो नया जन्म अति उच्चतम प्रदान करुंगा।

अब तो मानव जाग

जीवन जीता जा

खुद को खुद की पहचान से

जीवन महेंकाता जा

"Vibrant Pushti"

बंसरी बाजे केवल राधा की याद में

राधा की याद में प्रीत की पुकार में

सुरों से फूल चढाये

पलकों पास बुलाये

दौडी दौडी आये प्रियतम की पुकार में

पायल की रणकार गाजे

चुडी की खनखन बाजे

बाजे कनक कुंडल प्रियतम की पुकार में

आत्म के पास बैठे

अश्कों से चरण पखालें

विरह की वेदना मिटे प्रियतम की पुकार में

"Vibrant Pushti"

हथेली पर श्याम लिखुं - कान्हा के नयनों जब राधाजी को कहा।

राधाजी के होठों ने तब पुकारा - श्याम! सारे अंग पर श्याम ही श्याम है, तुम लिखदो साथ में राधा।

ओहहह! श्याम लिखने बैठे राधा नयन नीर समाय।

अंगुली में रह गई तिकिया दो नैन बरसाये।

यही दरश निशिदिन निरखुं मोहें नयन बरसाये।

"Vibrant Pushti"

व्रज धाम छूना है सखी!

राधाजी को कहिये

राधाजी को कहिये

बांके बिहारीजी को कहिये

व्रज की रज अंग को लिपटाईये

यमुनाजी के बुंद को अंग उतराईये

विनंती हमारी बार बार

राधाजी को कहिये

बांके बिहारीजी को कहिये

बंसी की धून सुनावो

गौचारण की रज बरसावो

गोवर्धन को कहिये

श्रीनाथजी को कहिये

व्रज धाम छूना है सखी!

"Vibrant Pushti"

श्रीकृष्ण आनंद स्वरूप है, आनंद स्वरूप केवल आनंद ही प्रकट करते है। उन्हें न दुख पता है न कष्ट, उन्हें न पाप पता है न पुण्य, उन्हें न दोष पता है न अविद्या। जहां भी वह है वहां केवल आनंद। सदा भक्त के साथ ही रहते है और भक्त के अंदर उनका प्रादुभाव है ही।

अगर हम खुद का सोचे - सच ही समझना हमारी साथ या अंदर श्रीकृष्ण है?

ऐसा न कहना हम प्रकृतिमय है, हम संसारी है, हम ना समझ है, हम अज्ञानी है।

श्रीकृष्ण का प्रादुभाव सदा ही है इसलिये तो वह पूर्ण पुरुषोत्तम है, जो सदैव है।जो सदैव रहते है वह सदा अविद्या का नष्ट करते है।

हमारी अविद्या नष्ट क्यूँ नहीं होती?

समझलों!

जानलों!

पहचानलों!

जागलो!

"Vibrant Pushti"

पल की सोच पल की राह

पल की क्रिया पल की गति

पल से बंध गयी

पल से छूटने पल पल डूबते

पल पल कहा खो जाते है

पल की न खबर न खुद की खबर

बस ऐसे ही जीते जाते है।

"Vibrant Pushti"

"राधा कान्हा" की हर रीत निराली है।

जब भी देखे श्यामा प्यारी को और जब भी देखे श्याम नटखट को तो दोनों सौंदर्य का सूरज। राधा श्याम से सुंदर और श्याम राधा से सुंदर।

नयन से निहाले तो अलग, श्वासों से छूये तो अलग, चरण स्पर्श से छूये तो अलक, होठों की पुकार से छूये तो अलग, शृंगार की महक से छूये तो अलग, अलंकृत की कृति से छूये तो अलग, चूडियाँ की खन खन से सुने तो अलग, पैजनीया की रिमझिम से सुने तो अलग।

कैसी है ये रीत अंग अंग की अंगडाईओ की जो हर अदा में अनोखे, हर कला में निपुण, हर भाव में सर्वोत्तम। नखशिख से सर्वाधिक सर्वोच्च। क्या सजे क्या पूरे रंग प्रीत के कि साँवरिया साँवरि हो जाय या साँवरे साँवरिया हो जाय।

नहीं पहचान दो आत्म कि परमात्मा पूर्ण हो जाय।

"Vibrant Pushti"

"राधा कृष्ण" की लीला कितने रंग और रस से भरी है।

न कोई ऐसा रंग बिखरने के जिसमें साँवरि साँवरिया रंगाये नहीं हो।

न कोई ऐसा ख्याल खिलने जिसमें श्यामा श्याम जागे नहीं हो।

न कोई ऐसी रीत रचाई जिसमें राधा कृष्ण रचे नहीं हो।

"Vibrant Pushti"

" रंग रंग व्रज रंग राधे "

"कृष्ण" का प्राकट्य कहीं कला और अखलित प्राकृतिक धारा से हुआ है। यह कला और धारा उन्होंने खुद ने यही सृष्टि और यही ब्रह्मांड से शिखी थी। यही कला और धारा से उन्होंने दुष्टों का नाश किया था।

यह हर कला और धारा सृष्टि और ब्रह्मांड में हर पल अविरत बहती है इनमें से हम को ग्राह्य करने से हम भी दुष्टों का नाश कर सकते है। यही तो सर्वोत्तम रीत है जीवन में सलामत रहने की।

"Vibrant Pushti"
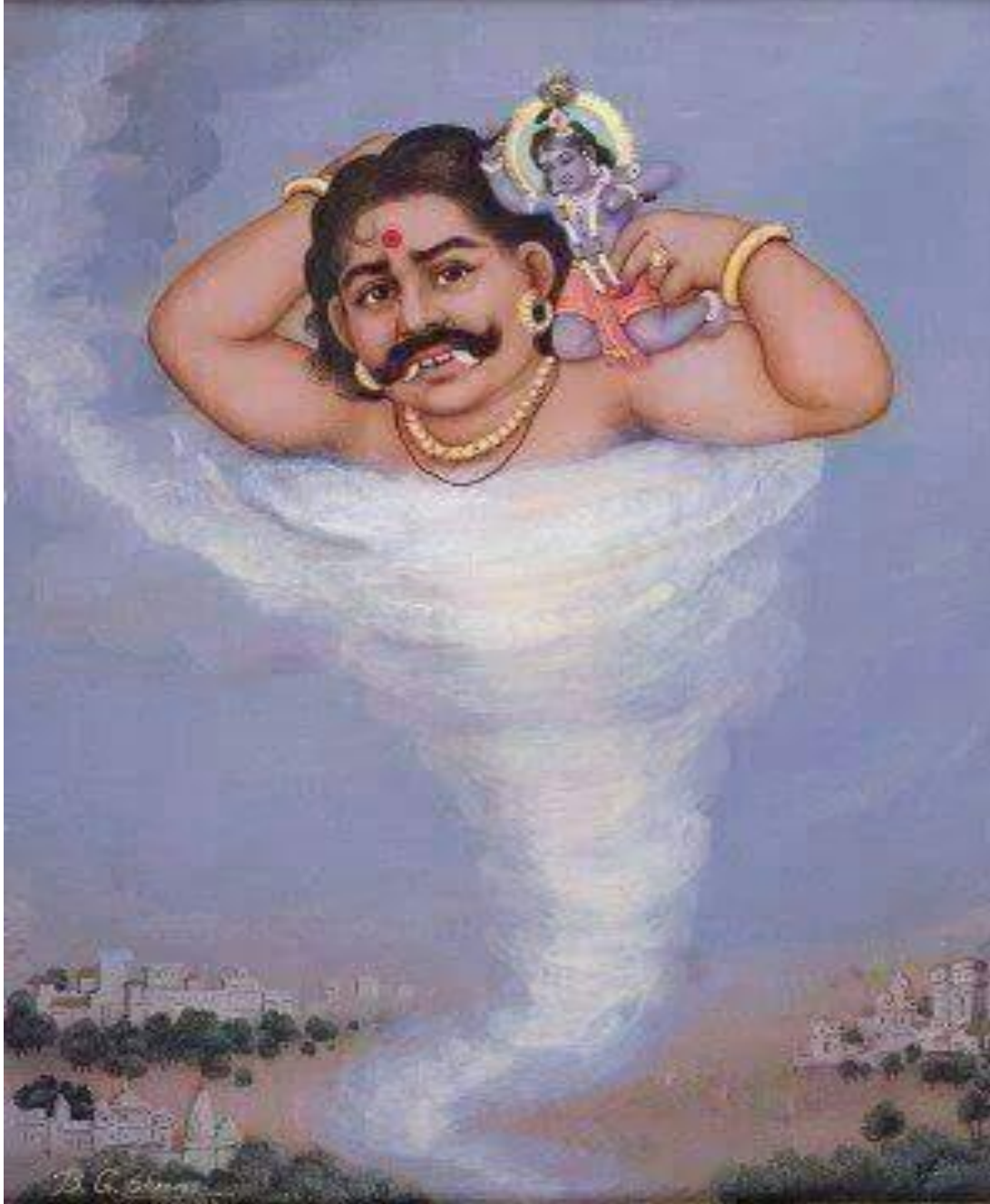
पुष्टि मार्गीय पद्धति में सेवा अनोखी रीत है, यह रीत में "श्रीप्रभु खुद के", ओहह! कैसे अनोखा प्राधान्य!

सच जो सेवा करते है उन्हें तो जीवन की हर पल अलौकिकता सानिध्य। हर तरह का आनंद। हर तरह का स्पर्श। हर तरह का लावण्य। हर तरह का ऐहसास।

यही सर्वोत्तम रहस्य है यह सेवा में।

"श्रीवल्लभाचार्यजी" को अखंडितता से नमन।

"Vibrant Pushti"

" पुष्टिमार्ग प्रणेता श्री वल्लभाचार्य की जय "

" श्री गुंसायजी परम दयाल की जय "

" पुष्टिसखा अष्टसखा की जय "

द्रडइन चरणन केरो भरोशो द्रडइन चरणन केरो

"रथयात्रा"

अति सूक्ष्मता से समझना है, यह "रथयात्रा" क्या है और क्यूँ है?

"रथयात्रा" का अर्थ है - रथ या ने अपना शरीर और यात्रा या ने अपने शरीर पर चलना।

अपने शरीर पर किसको चलाये तो "रथयात्रा" ?

जिसने हमें शरीर प्रदान किया है।

माता पिता, गुरु और श्रीप्रभु।

जिन्होंने हमें प्रदान किया वह सूक्ष्मता से सारे शरीर पर भ्रमण करे या ने यात्रा करे।

"रथयात्रा" का मुख्य उद्देश्य ही यही है कि हमें अपना शरीर को उदेश्य यही की हमें कैसा होना है? और यह प्राकृत तत्वों से जुड कर उनकी उत्तमता को ग्रहण करके हमें शरीर को सर्वोत्तम करना ही करना है तब हमारे माता पिता, गुरु और श्रीप्रभु को यात्रा करवाये। यही है "सत्य रथयात्रा"।

"Vibrant Pushti"

आज शिर पर मुकुट पहनके

व्रज राज गली गली पधार्यो

गले गुंजन माल माथे मयूर पंख

खभे उपरणा रंगीन लहरायो

प्रभु आंगन द्वार प्रकटायो

"Vibrant Pushti"

" श्रीनाथजीबावा की जय "

पीला पीतांबर जरकसी जामा

माथे तिलक लाल सजायो

कनक कुंडल नीले नीले

मुझे कंठ से " हे " कही पुकार्यो

"Vibrant Pushti"

प्रभु हमारे हम तुम्हारे

दया करो हे प्राण प्यारे

न कभी न छूटे साथ निराले

सदा रहेना निकट हमारे

निरखु सुंदर श्याम ने

पलकों से वंदन करके

गावु गीत सुंदर श्याम नुं

मुखडे से रंग उडाके

पधरावुं कमल सुगंध के

चरण में दंडवत करके

"Vibrant Pushti"
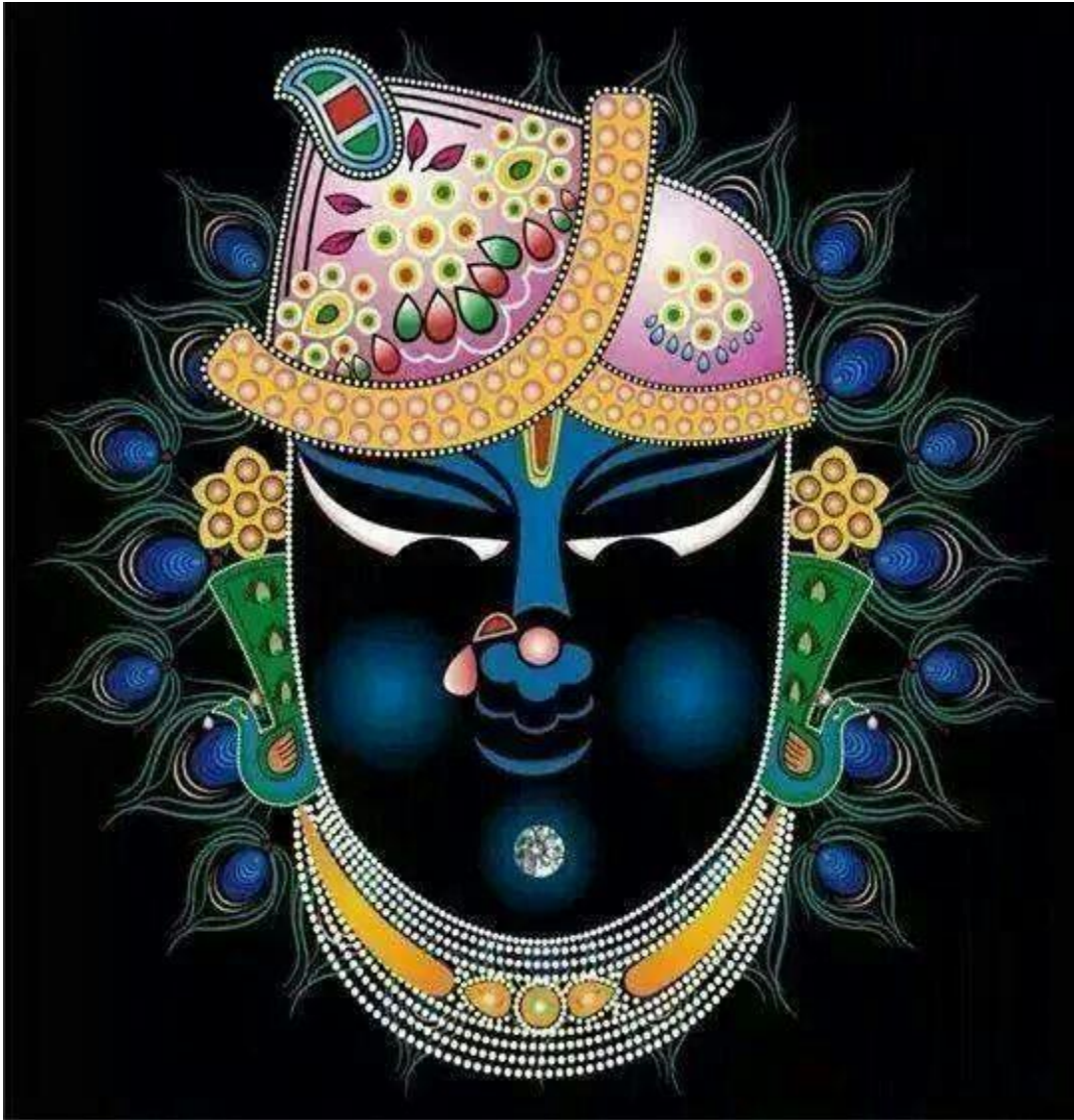
घन घन घटायें घन घोर घड घड कर दौडे

घन घन गहरा रंग बिखराके घनश्याम पुकारे

घड घड वायु लहराये थड थड रथ दौडे

घड घड दौडत घनश्याम खड धरती गजाये

भक्त मिलन की प्यास प्रीत अमृत बहाये

दौडे पशु पंखी वन जन जीवन हर लहराये

रथयात्रा की नव नव यात्रा नूतन रीत दर्शाये

है यात्रा जीवन की

चलते चलते हमें सहारे

चलते चलते हमें सँवारे

हे जगन्नाथ तेरी हो जय जय कार

बहोत बार सुनते है,

बहोत बार पढते है,

बहोत बार कहते भी है!

वाह! क्या है दुनिया?

जब अपने मन को भाया तो उत्तम दुनिया

जब अपने तन को चाहा तो उत्तम दुनिया

जब अपने विचार को माना तो उत्तम दुनिया

जब आपको सब ने अपनाया उत्तम दुनिया

तो भी यह दुनिया में तुम्हें आनंद के लिये झझुमना पडता है?

क्यूँ?

यही महत्वता है यह दुनिया की जो हर परम उत्तम को जागना होता है।

"Vibrant Pushti"

"गुरु" ओहहह! परमोत्तम कक्षा - स्थान।

जीवन को संवारने, जीवन को कंडारने में, जीवन को घडतर देने में सर्वोपरि स्थान, सर्वोच्च द्रष्टा, सर्वाधिक मार्ग दर्शक।

जीवन की हर कठिनाई से मुक्त करे, जीवन की संस्कार शैली में उत्कृष्ट करे, जीवन की धर्म संकट परिस्थिति में रक्षण करे। यही है गुरु की पहचान, यही है गुरु की सूक्ष्मता।

मनुष्य जीवन में जो व्यक्ति मनुष्य को यही कर्तव्य से निभावे वहीं ब्राह्मण है।

यही गुरु की हर आज्ञा, हर सूत्र हमारे जीवन को अलौकिकता प्रदान करते है।

हमें भी हमारे जीवन को उच्चता प्रदान करना हो तो योग्य गुरु से ही शिक्षा और दिक्षा करनी है।

"Vibrant Pushti"
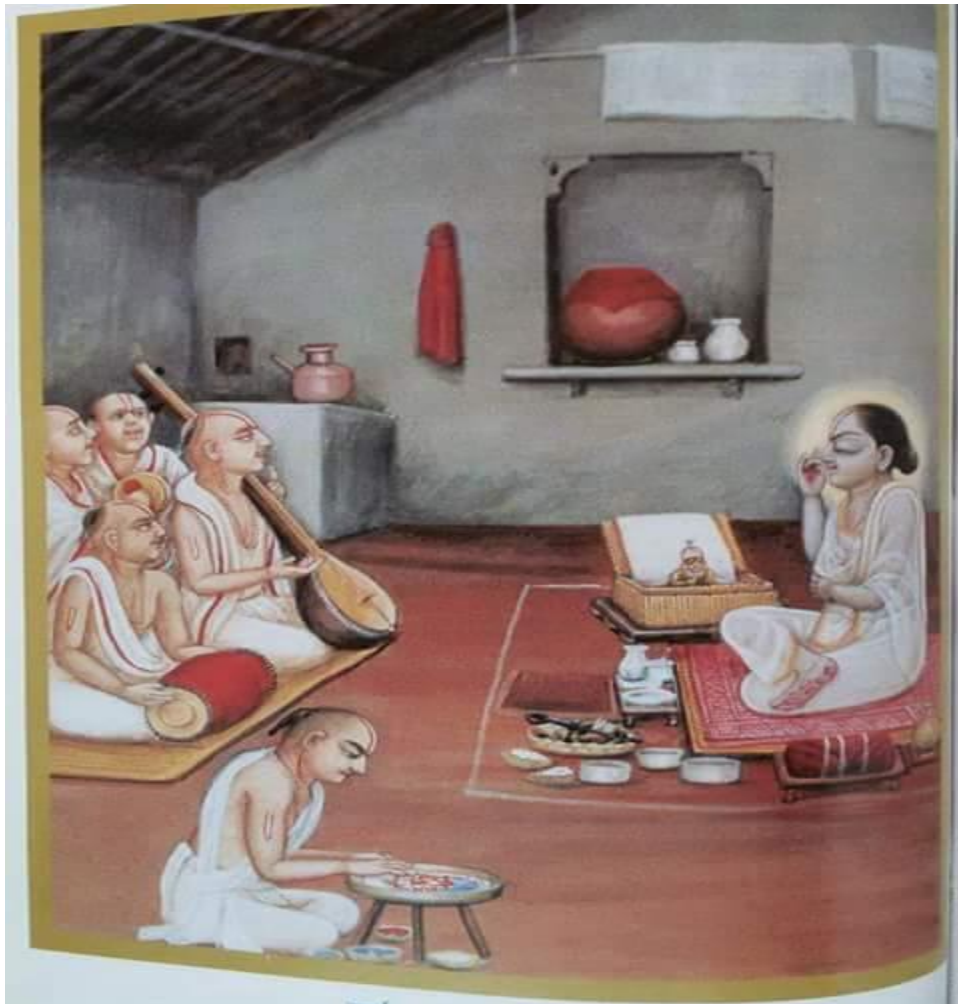
"मनुष्य अधिकार" कौन देता है? हम सब समझते है कि हम पृथ्वी पर जन्म धारण किया तो हमारा सर्वत्र अधिकार है, हम सबके है और हमारा सबकुछ है।

अच्छा!

कैसे हमारा सबकुछ है और सब हमारे है?

हम एक छोटे से तिनके के लिये आपस में झगडते है, और तो क्या हम हमारा एक मुहं से निकले अक्षर लिये मतभेद रखते है, इससे ज्यादा हम अपने माता पिता के लिये बैर रखते है, तो अधिकार कैसा?

सच कहे तो हम अधिकार के बिना ही जीते है और हर बार अधिकार के लिये झझुमते है।

"अधिकार" ओहहह!

है ने कितना अजब आश्चर्य!

जिससे भी मिले या कहे

उन्होंने ऐसा किया वैसा किया!

हर कोई बोलते रहते है! आखिर ....

ओहहह!

"Vibrant Pushti"

यह अधिकार हमें कहां से पाना है?

कहां से ग्रहण करना है और कौन प्रदान करता है? यह पहचानना अति आवश्यक है।

हम मनुष्य को हमारी पहचान पा नी है, समझनी है।

हिंदू संस्कृति का मूल यहां ही है।

यही हमारी सार्थकता हमें जीवन को योग्य कर सकती है, समृद्ध कर सकती है, हर कठिनाई में मार्ग दर्शन करती है।

आजकल यह परंपरा को भूल गये है और भटक गये है, इसलिए हमारे जीवन की और हमारी यही जीवन परिस्थिति है जो बार बार सुख दुख की भ्रमणा में जीते है।

"Vibrant Pushti"

"क्रिययैव ज्ञानं भवति"

क्रिया करने से पहले विचार करते है और जब विचार द्रड होता है तो हम क्रिया करते है। यह विचार हममें कहीं रीतो से जागते है, हम जब एक निश्चितता पर आते है कहीं तरह की असर समझे तब क्रिया करते है।

यह क्रियासे जो भी हम पाते है वह हम है। यही से हम जानते है, समझते है, पहचानते है और अपना जीवन लक्ष्य तरफ गति करते है।

इसका अर्थ यह हुआ कि हम जो भी कुछ ज्ञान और भक्ति पाते है वह यही रीत से।

तो हमें कैसी सोच या ने विचार करना चाहिए?

जो हम है और हममें परिवर्तन करना है?

"श्रीवल्लभाचार्यजी ने अति उत्तमता से कहा है कि सुद्रडता से विचार करो और निष्ठा से क्रिया करो तो जीवन मधुर ही होगा।

"Vibrant Pushti"

नयन न खोलूं तो नाचे नंद किशोर

मुख न मलकावुं तो मुस्कुराये मोहन

अधर न हलावुं तो खीर खिलाये सांवरा

कान न सुने तो कीर्तन पुकारे कान्हा

कैसी है ये प्रीत जगायी

जो पल पल मुझे सताये

खो गई श्याम की नटखट अदा में

लूट गई कनैया की रंगीन छटा में

"Vibrant Pushti"

जगत के हर जीव तत्व ने

राधा को कृष्ण से जोडा

राधा को श्याम से जोडा

राधा को गोविंद से जोडा

राधा को माधव से जोडा

राधा को कान्हा से जोडा

राधा को कनैया से जोडा

राधा को गोपाल से जोडा

राधा को साँवरिया से जोडा

राधा को नंदकिशोर से जोडा

राधा राधा ही है जो खुद से खुद को जोड कर परब्रह्म को जोड दिया।

प्रीत की रीत निराली

जो खुद से खुद जोडे

उनसे परब्रह्म जुडने दौडे।

"Vibrant Pushti"

राधाजी ने श्रीकृष्ण को अपलक नजर से देखते झुकते नयनों से कहा - प्रभु! क्या है? क्यूँ अपलक नयनों से स्थिर हो? क्या हो रहा है तुम्हें? तुम्हारी अपलकता मेरे नयनों को अपलक झुकाये रखतें है, हमे भी हमारी असर आपके नयनों में बसानी है।

श्रीकृष्ण ने अपलक नयनों से होठों को संकेत किया और होठों से प्रीत का सागर छलकने लगा। हर बिंदु से हर तरंगे लहराने लगी, जिससे राधाजी की जुल्फें मंद मंद महकती उडने लगी जैसे रंग बिरंगी तितलियाँ।

"Vibrant Pushti"
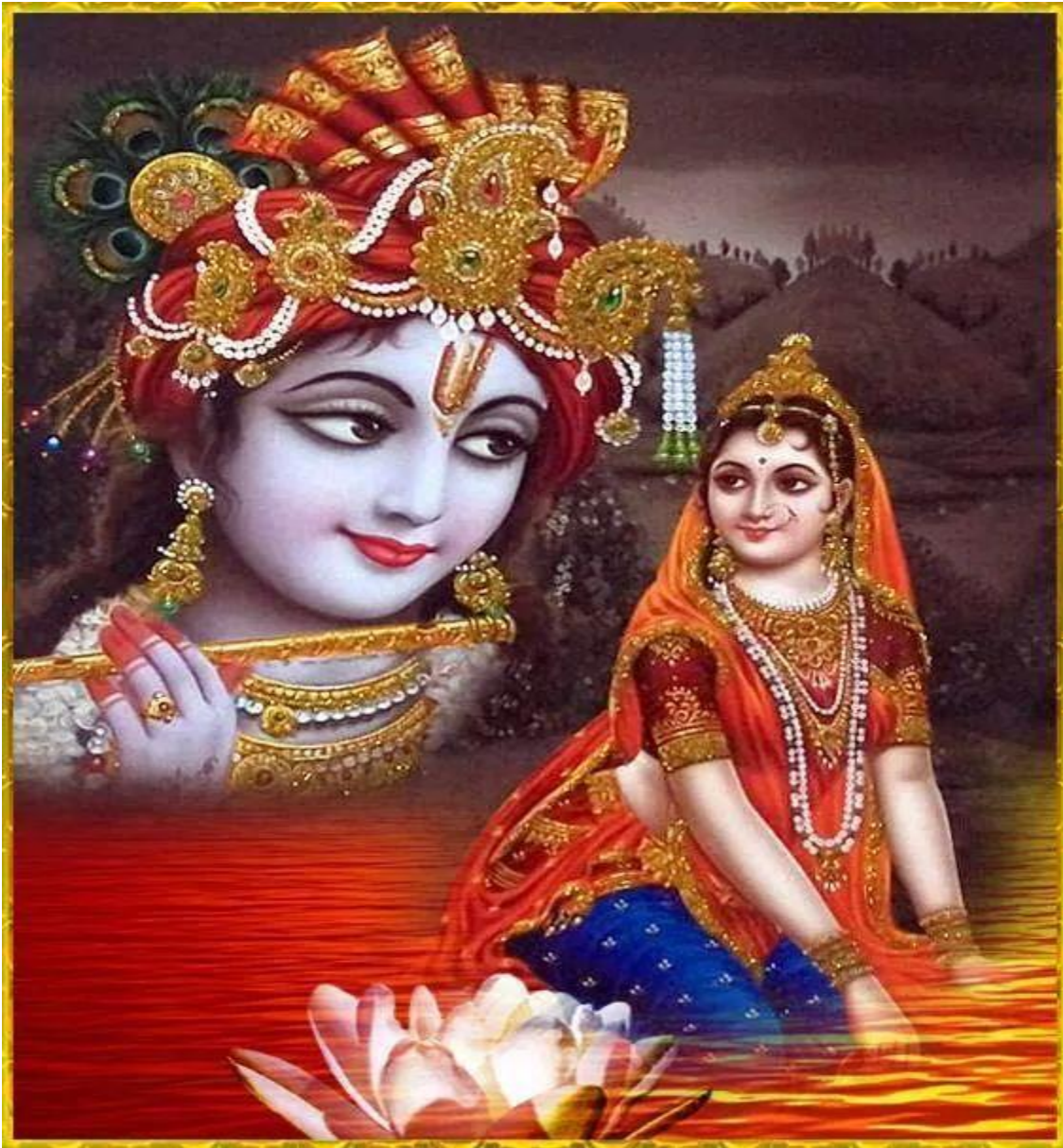
घने और लंबे केश में तारों की टीम टीमाहट झबकने लगी, जो श्याम से अधिक घनघोर श्याम की घटादार कालिमा में हर एक रेशम से कोमल हर जुल्फ श्रीकृष्ण के नयनों को आकर्षित करके मन को बांध रही थी। श्रीकृष्ण अपनी उँगली से छू कर खुद को अनेरी घनघोर घटा में छुप जाने की तीव्रता से खिंचाते है। हर लट से नयी नयी कृति जैसे पत्तों की वेल जो कभी फरररररर फरराती थी, जो कभी हवा के झोंके से लहराती थी जिससे लगता था तितलियाँ संताकूकडी खेलती थी या टीम टीम तारें छुपा छूपी खेलते है।

हर जुल्फ श्रीकृष्ण की सृष्टि थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण की गति थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण की राह थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण की कहानी थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण की निशानी थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण की लीला थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण का संकेत थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण का संदेश थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण की कला थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण की कृति थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण की बांती थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण की प्रीत सिंचन धारा थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण के शबनम की धरोहर थी

हर जुल्फ श्रीकृष्ण विरह की छांव थी

"Vibrant Pushti"

हमारी अंदर अच्छाई की वृत्ति है पर क्यूँ नहीं खिलती है?

हम सदा हमारा ही क्यूँ सोचते है और करते है?

हमारी आत्म ज्योति अंधकार को तोडने क्यूँ नहीं जगाते है?

क्या है हममें ऐसा जो हमें जागृत नहीं होने देता?

"Vibrant Pushti"

तेरी शरण में

तेरे ही चरण में

तु मेरा गोपाल तु ही मेरा गोविंद

तु ही तारणहार तु ही है नंदलाल

"सत्कर्मणा श्लाध्या भवन्ति ।

ततोपि ज्ञानेन ततोपि मक्तया,

भक्तावपि परमप्रेम सर्वोत्कृष्टम्।

प्रमाणातु प्रमेयबलमधिकं तेन

स्वतंत्रभक्त्यपेक्षयापीयं

प्रमेय भक्ति: रसाला"

सत्कर्म करना ही अलौकिक है, जिससे केवल ज्ञान, भक्ति और संस्कार प्राप्त करते है। जो कर्म से केवल परम प्रेम का ही प्राकट्य हो वह सर्वोतम है। यह कर्म का प्रमाण निशंक है पर उनका प्रमय फल सर्वाधिक है। सत्कर्म स्वतंत्र भक्ति से करने से भक्ति का प्रमय बल सर्वाधिक है। जैसे नरसिंह महेता, मीरां बाई, संत ज्ञानेश्वर, भक्त प्रह्लाद।

"Vibrant Pushti"

किनारों से पूछ लिया यह जल कहां का है?

सागर से पूछ लिया यह संगम किससे है?

जल ने कहा क्यूँ किनारों से पूछते हो, क्यूँ सागर से पूछते हो।

पूछना हो तो जल से मूल को पूछो यह जल किस पूकार से बहाया है?

"Vibrant Pushti"

यू ही उगते सूरज की तरह

यू ही चलते सूरज की तरह

मैं उगता रहूँगा चलता रहूँगा

तेरा ब्रह्मांड में तुजे सजता रहूँगा सजाता रहूँगा

हर बूँद ने पूछा कहा बरसे

आह ने कहा जहा प्रियतम ढूँढे।

"Vibrant Pushti"
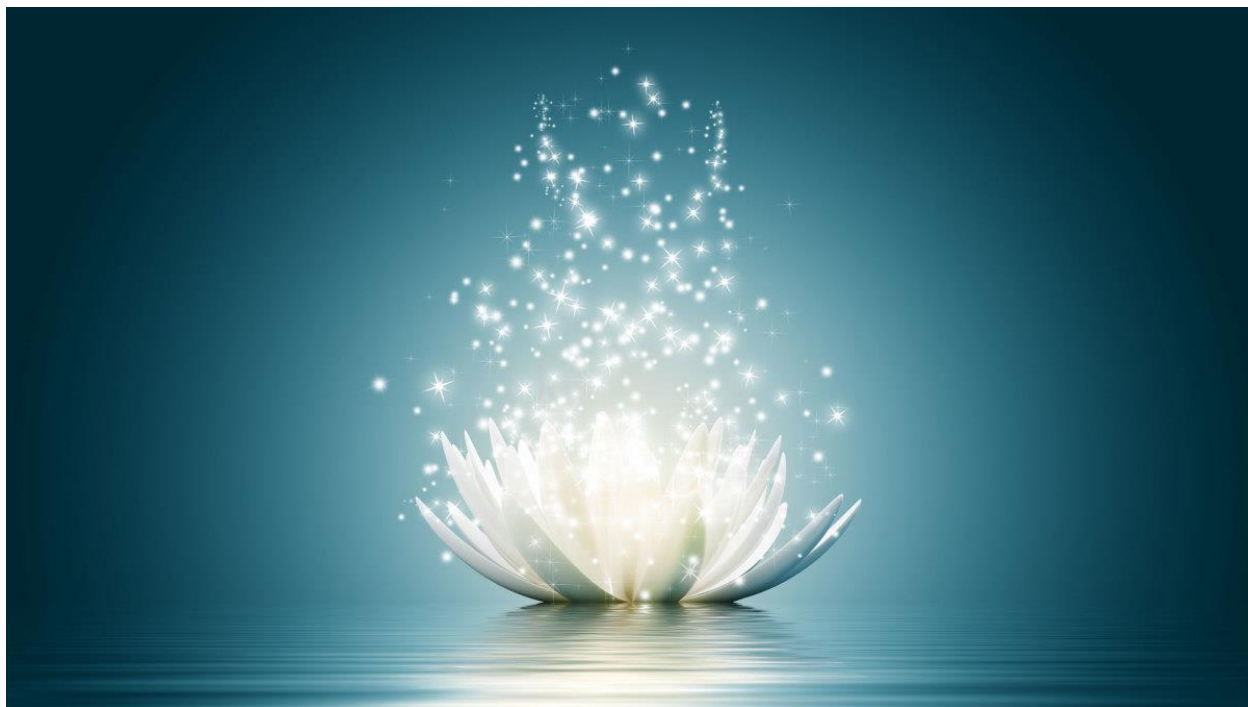
बूंद बूंद से स्पंदन पाये

स्पंदन स्पंदन से तु निखराये

तेरे निखरने मुझमें जागने

तु ही केवल है ईश्वर

मेरे साथ मुस्कुराने

मेरे साथ पकड़ने

मेरे हाथ थामने

मेरे हमसफर चलने

जीने की उम्मीद के साथ खुद की पहचान भी समझते जाये तो सच कहे हम खुद आनंद का उद्‌भव करके जीवन को मधुर कर सकते है।

यह पहचान समझने के लिये उत्तम विचार से क्रिया, निस्वार्थ भावना और सेवा हमें हर पल जगाती ही है, और जीवन सफल।

"Vibrant Pushti"
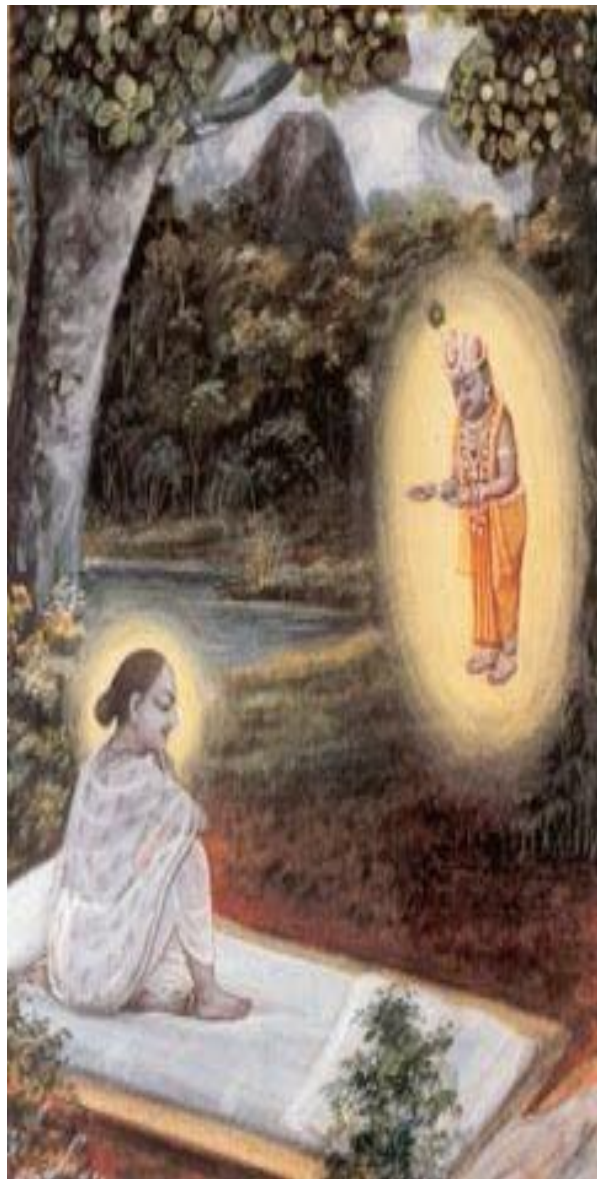
हे वल्लभ तु शिद ने व्याकुल हो

साथ तेरे संकेत मेरे तुझसे सिद्ध कर

खुदा के बंदे से पूछे

खुदा क्या है?

खुदा तो हम खुद है

जो हर पल तेरे इश्क में ही रहते है।

"Vibrant Pushti"

"पुष्टि" का मूल अर्थ है "परम मूल तत्व से प्रीत करना"।

जगत के कोई भी तत्व कितनी मात्रा में प्रीत करता है वह नहीं जानता। "पुष्टि वह साधन है, पुष्टि वह लीला है, पुष्टि वह पहचान है, पुष्टि वह प्रमय है" जो हम कौन है, कया करना है, कैसे करना है और क्यूँ करना है? यह सर्वत्र की योग्यता है। जो हमें हर पल खुद को यह प्रकृति के तत्वों से सिंच कर परम मूल तत्व से प्रमय प्रीत की पहचान से उनसे शरणागत करने की रीत है।

"Vibrant Pushti"

कितना अलौकिक है यह जीवन

कितना अलौकिक है यह जगत

कितनी अलौकिक है यह धरती

कितनी अलौकिक है यह सृष्टि

कितनी अलौकिक है यह प्रकृति

पल में जगाये पल में क्या क्या कर जाये

पल में हसाये पल में कहां कहां ले जाये

पल में रचाये पल में कुछ कुछ करवाये

सच में अलौकिकता यही है जो हमें कुछ कुछ जताये

वाह! मेरी जीवन जननी आत्म को क्या क्या रंग सजाये

वंदन करे हम हर पल तुम्हें जो मुझे हर पल तुझ संग जोडाये।

"Vibrant Pushti"

यह कैसा एहसास है?

यह कैसा इंतजार है?

यह कैसी तडपन है?

यह कैसी याद है?

यह कौनसा रिश्ता है?

यह कैसा बंधन है?

हर तरफ से केवल आग ही जलती है।

"Vibrant Pushti"

एक किरण से सृष्टि जागे

एक बिज से धान्य उगे

एक रज से जीव जन्मे

एक रीत से आत्म जुडे

कैसी निराली लीला निर्माण की

सर्व से खेले तो भी एक ही कहा जाय

एक ही इश्वर, एक ही खुदा, एक ही अल्लाह

एक ही परमात्मा कहा जाय।

"Vibrant Pushti"
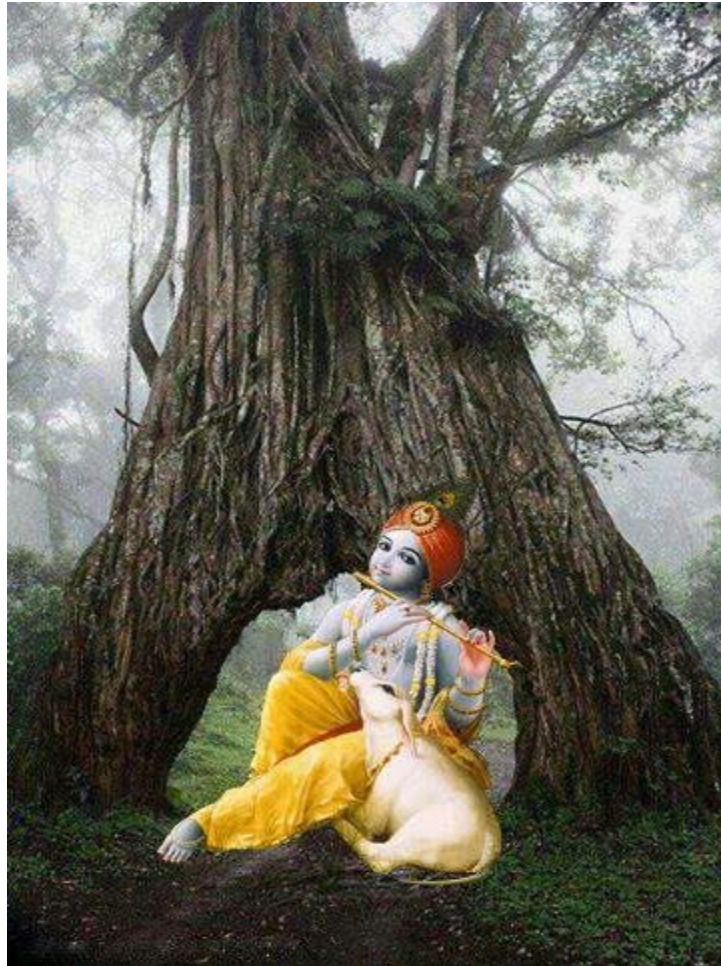
यारों! ख्यालों की दुनिया में यारों का सितारा छा जाता है

तो चांद भी दौड कर आता है

सूरज भी दौड कर आता है।

कहता है चांद

सितारों के लिये ही हम घटते है,

सितारों के लिये ही हम बढते है,

सितारों से छूते ही हमारी मोहब्बत का पैगाम पाता हूँ।

कहता है सूरज

उष्ण करता हूँ सागर

उष्ण करता हूँ धरती

रोशन करता हूँ चांद

रोशन करता हूँ सृष्टि

बहती नदियाँ से प्यार सिंचन कर

सितारों से प्यार की गंगा बहलाता हूँ।

ओहह! प्रीत का स्पर्श!

जो

सारे ब्रह्मांड को प्रीत में डूबोता हूँ।

"Vibrant Pushti"

"ज्ञान" ज्ञान का अर्थ है सूक्ष्मता से समझना और योग्यता से करना। हर तत्व का अभ्यास पृथक्करण से करना और उनका उपयोग केवल सृष्टि को समांतर करने के लिये करना। ऋषि, महर्षि, तत्वचिंतक, वैज्ञानिक, प्रज्ञानी आदि सर्वे जो भी कुछ करते है केवल सूक्ष्मता पहचानने के लिये।

यह पहचानने के बाद वह ज्ञान को समयोग निराली रीत से अनेक प्रयोग करके उपयोग की दिशा दर्शायेंगे। यही उनकी उपलब्धि है।

हमारे डॉक्टरों, वकीलों, इन्जीनियरों को यह बात समझनी है कि उनका ज्ञान समांतरता के लिये है, समाज को योग्य करने के लिये है, समाज को समृद्ध करने के लिये है।

सच कहे जीवन का कोई भी व्यवहार योग्यता पूर्वक नहीं है तो समझना उसका परिणाम अयोग्य ही पावोंगे ही। यह सिद्धांत है कर्म का। विश्वास का उपयोग की गति केवल विनाश की ओर ही ले जाती है।

"Vibrant Pushti"

विठ्ठल पधारे जगत जोवा ने रे लोल

पधारे भक्तों नी साथे जोवा ने रे लोल

बाजे ढोल नगारां मंजीरा रे लोल

नाचें भक्त मंडल था था थैया रे लोल

उडे रंग गुलाल अने अबिल रे लोल

उडे फर फर रंगबिरंगी धजा रे लोल

मुख मलकें विठ्ठलनुं मरक रे लोल

खेले नयनों थी प्रीतनी आंखमिचौली रे लोल

विठ्ठल पधारे जगत जोवा ने रे लोल।

"Vibrant Pushti"

व्रज व्रज पुकारे व्रज बिहारी

बजाये बंसी अधर धरन पर

नाच नचाये व्रज गोपीयों को

ताल मिलाये मयूर पंखुरी को

शुक गाये पपीता गाये गाये व्रज ग्वाल

माखन उडे मिसरी उडे उडे रंग प्रीत रे

आवो गाये धून रसिक प्यारे की

खेले होली प्रीत भरी प्रियतम दुलारे से

"Vibrant Pushti"
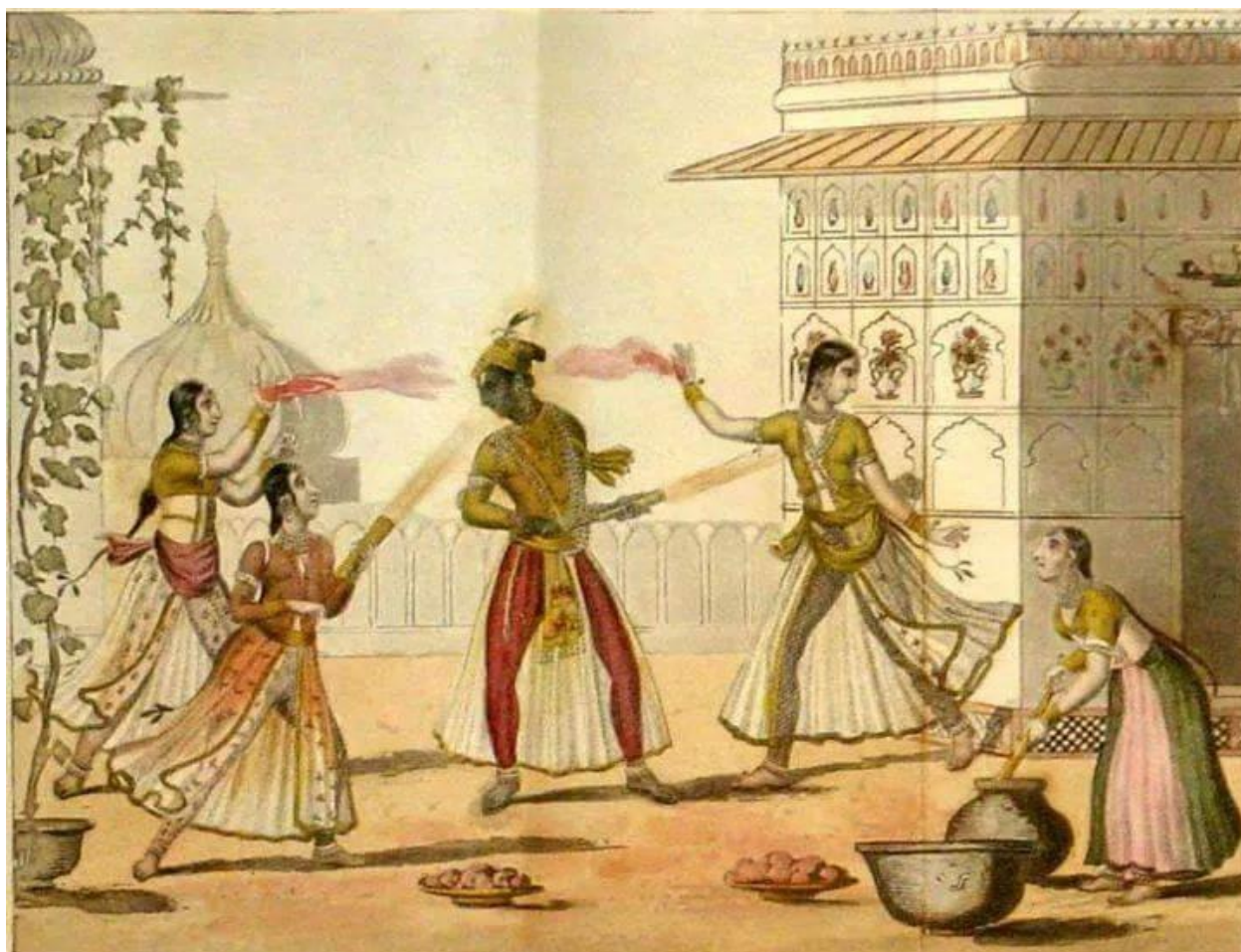
"श्री भगवद" स्वरूप जानना है, समझना है और पहचानना है तो **"श्री मद् भागवत"** योग्य साधन है। यह **"श्री भगवद"** का हर तरह की सृष्टि से पहचान कर सकते है।

यह साधन का उपयोग के लिये खुद की सांस्कृतिक केलवनी और खुद को योग्य करना होता है।

क्यूँकि "श्री मद् भागवत" विशुद्ध ज्ञान और भक्ति का अलौकिक समन्वय है। ज्ञान के साथ भक्ति का उदय होता है। यह ज्ञान और भक्ति से खुद की पहचान करते है और परमोत्तम मार्ग पाते है श्री प्रभु का हर पल स्पर्श करने का, श्री प्रभु की हर लीला से सत्य पहचानने का।

यह स्पर्श लीला का मूल को सर्वत्र आकृत विचार और चिंतन करने से ही जागता है।

हर लीला ज्ञान और विशुद्ध भाव सभर है, न कोई शंका या न कोई तर्क है।

"Vibrant Pushti"

जीवन प्राण है - श्री मद भागवत

जीवन संस्कार है - श्री मद भागवत

जीवन ज्ञान है - श्री मद भागवत

जीवन भक्ति है - श्री मद भागवत

जीवन सिद्धि है - श्री मद भागवत

जीवन शक्ति है - श्री मद भागवत

जीवन आधार है - श्री मद भागवत

जीवन रक्षक है - श्री मद भागवत

जीवन समांतर है - श्री मद भागवत

जीवन सलामत है - श्री मद भागवत

जीवन संगीत है - श्री मद भागवत

जीवन समर्पण है - श्री मद भागवत

जीवन शरणागत है - श्री मद भागवत

जीवन सत्य है - श्री मद भागवत

जीवन विश्वास है - श्री मद भागवत

हर पल विपल सपल स्मरण करे श्री मद भागवत आत्म के साथ सदैव "श्री प्रभु" रहते है। आत्म का रहे "श्री वृंदावन वास!"

"Vibrant Pushti"

"व्यूहरुप" जो रुप मूल है वह रुप को भक्त की योग्यता पूर्वक दर्शाना उसे व्यूहरुप कहते है।

"Vibrant Pushti"
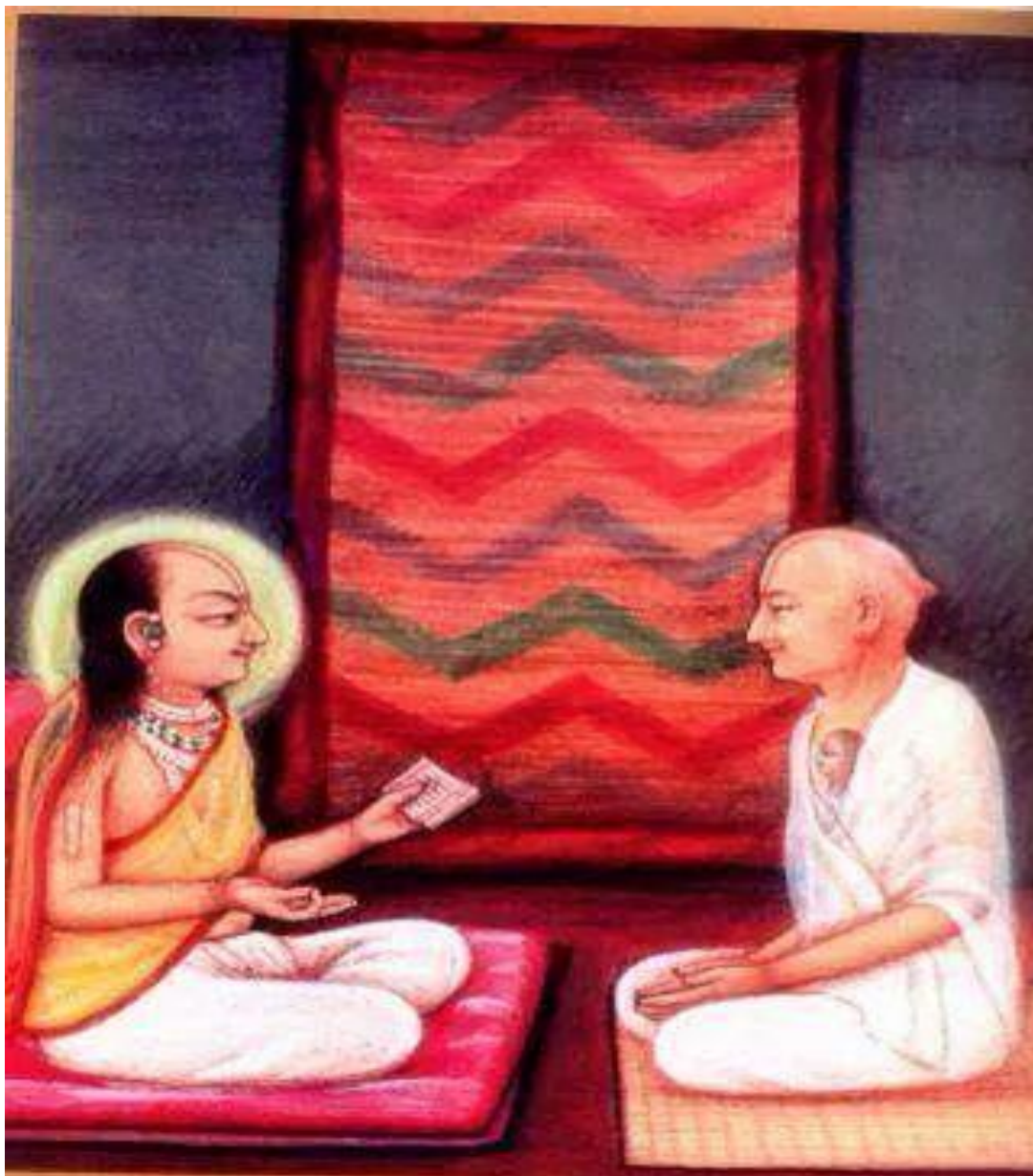
हे वर्यआचार्य ! तेंरे शरण धन्य जागयो

मेंरे अंतर मन मन बसयो

तु ही मेरा जीव उद्धार

तु ही ब्रह्म अवतार

"स्त्री" सर्वोत्तम और सर्वोच्च तत्व है। यह तत्व इतना पूजनीय है जैसे "श्री प्रभु" का पूजन।

सदा त्याग की भावना

सदा सहन करना

सदा साथ निभाना

"सर्वथा सद् संस्कारम् स्त्री उपलब्धिधा"

जीवन में न कभी निराशा

जीवन सदा महक भरा

स्त्री तत्व को समझना अति आवश्यक है।

सर्व धर्म संकल्प शुद्धता स्त्री से ही होती है।

सर्व उत्तम पूजा स्त्री के साथ ही होती है।

"Vibrant Pushti"

जीवन जीने के लिये जरुरत किसीको किसीकी नही होती है पर साथ सबका चाहिए। यह साथ या ने सहयोग और जरुरत या ने व्यवहार।

आज हम सबके साथ नही पर व्यवहार से जीने लगे इसके लिये सब साथ में कठिनाई आ रही है।

सहयोग से जीये तो दूध में मिसरी गुल गई।

हर व्यक्ति, हर कुटुंब, हर समाज, हर देश समृद्ध। यही मनुष्य जीवन है।

सजीव सजीव का साथ न रहे

तुटे जीवन, खोये संबंध, लूटे तन मन

हर रीत में चारो चित्त गुमाये

जीवन ऐसा आकुल व्याकुल व्याधि भरा

कौन कौन किसका सुख दुःख कटाये

सत्य पाने आये है असत्य से जीते जाये

कैसी भ्रमणा जाल में फसे कौन क्या निभाये

"Vibrant Pushti"

आकाश में अगनित छूपा हुआ तारों में कहीं एक तारा मुझे जगाने जाग गया,

धरती के किनारे से कोई अमृत सा झरना मुझे मिलने बह उठा,

पैड के असंख्य डाली से खिलते कहीं फूलों मे कोई फूल मेरे लिये खिल उठा,

क्या है यह अजीब अजूबा!

जो एक नजर से होने लगा?

"Vibrant Pushti"
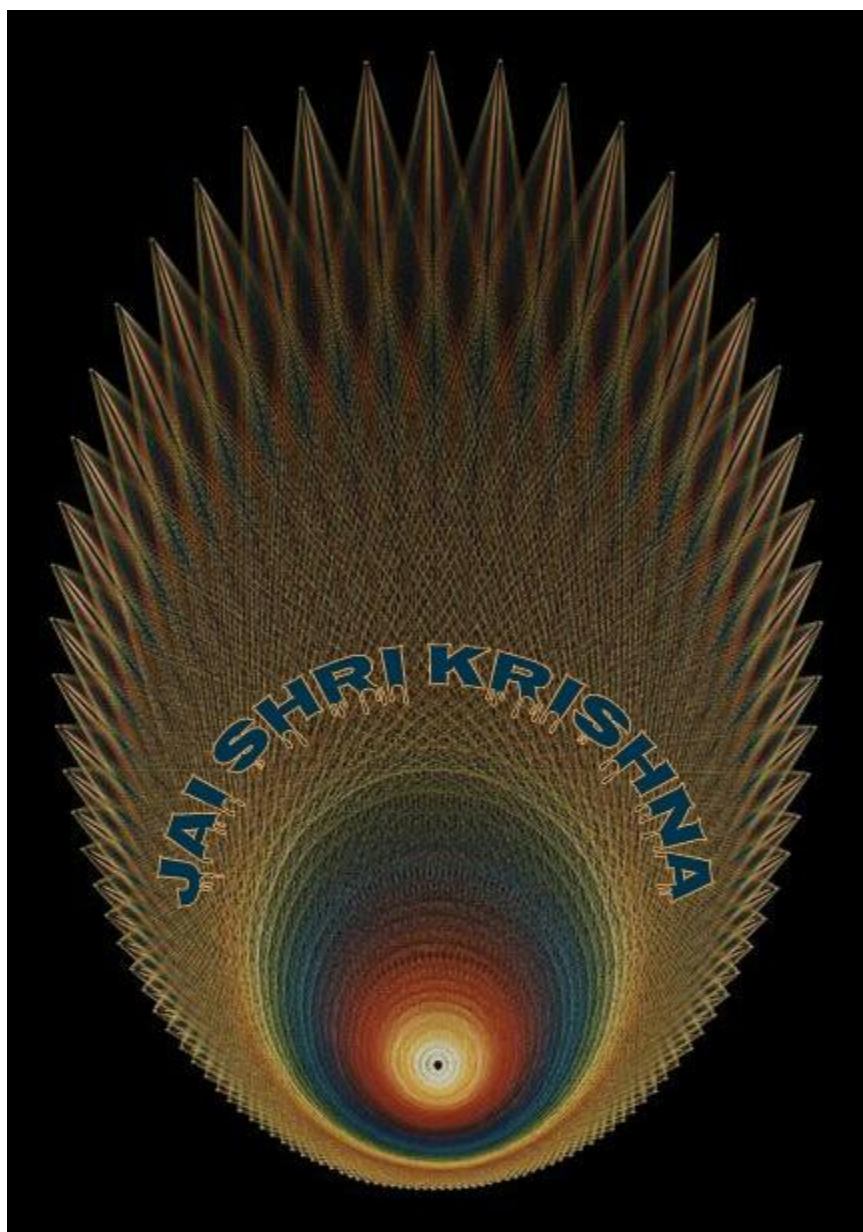
हर व्यक्ति कुछ तो है। यह कुछ या ने कोई स्वरुप अब यह स्वरुप खुद रचता है या दूसरों से रचा पर कोई स्वरूप है।

जो खुद स्वरूप रचता है वह महान आत्मा होता है और जो दूसरों से स्वरुप रचता है वह जीवात्मा रहता है जिन्हें सदा सांसारिक रीतो में रह कर खुद को बार बार मरना पडता है।

जो महान आत्मा होते है वह बार बार जीवन जीना समझाते है।

"Vibrant Pushti"
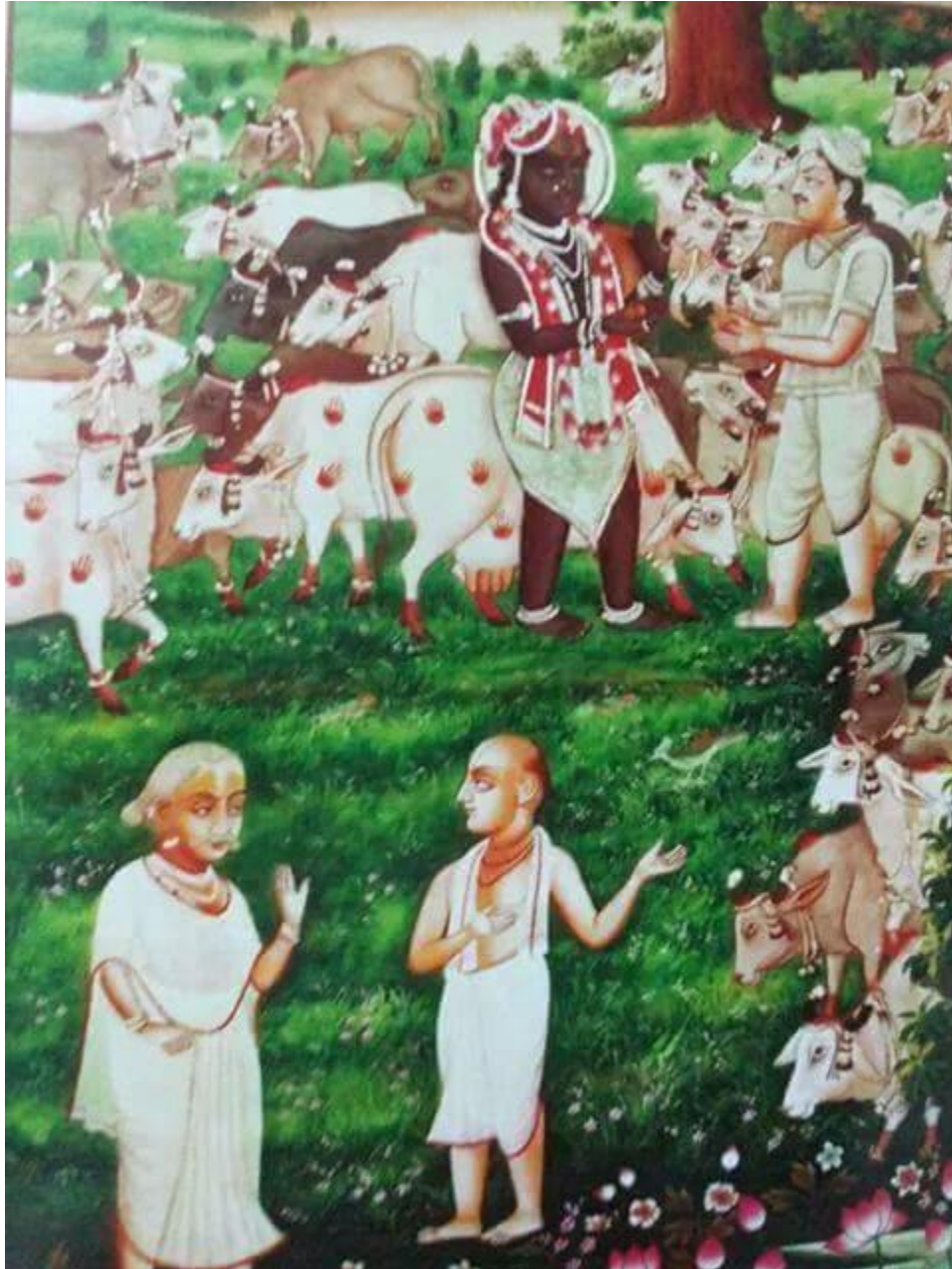
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वर

गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नम:।

अति गूढ और अति आवश्यक दिशा और निर्देश दर्शाया है।

सृष्टि के सर्जन हार, पालन हार और संहार हार केवल और केवल गुरु है।

ब्रह्मा - सर्जन हर तत्व का करते है उन्हें भी खुद की योग्यता पाने के लिये परमोत्तम तत्व की आवश्यकता रहती है।

विष्णु - पालन और संरक्षण समांतर सिद्धांत से करने के लिये खुद को यही सृष्टि से आत्मीय शक्ति प्राप्त करने के लिये परमोत्तम तत्व की आवश्यकता रहती है।

महेश - संहार और समांतर न्याय करने के लिये खुद में विशालता और शुद्धता धरने के लिये परमोत्तम तत्व की आवश्यकता रहती है।

यह सर्वे परं सर्वाधिक और सर्वोत्तम तत्वों को भी "श्री गुरु" की आवश्यकता है।

तो हम तो साधारण जीव तत्व है तो हमें योग्य "श्री गुरु" की आवश्यकता है।

हमें कैसे चैन करेंगे?

हमें "श्री गुरु" का चैन यही माध्यम से करना चाहिए -

१. जीवन जीते जीते अगर थोडी भी खुद की समझ हो और यही समझ में शुद्धता, अखंडता, योग्यता, शिस्तता, विश्वसनीयता, समांतरता जागे तो ऐसे व्यक्ति तत्व का चयन करना जो यही सर्वे में अधिक हो।

२. जीवन जीते जीते सही दिशा का मार्गदर्शन करे जिससे हम सदा सलामत रहे, हमें न कोई अविद्या का स्पर्श हो, न हम कहीं गिर जाये।

३. सदा साथ निभाये।

४. हमें विशुद्ध करके हमें योग्य बनाये ही चाहे हम कैसे भी हो।

"श्री गुरु" हमारे सर्वत्र से आपको दंडवत प्रणाम!

स्वीकार हो!

कृपा हो!

सदा सानिध्य हो!

"जय श्री वल्लभ"

"Vibrant Pushti"

हे गुर देव!

तडपत मन आज दर्शन काज

नजर हमारी चरण रज काज

पधारो हृदय जीवन धन्य काज

कैसे रहते है तुम बिन आज

तरसत धडकन संस्कार काज

न रह सकते पल पुरुषार्थ काज

आजावो अब भूल कर सघळे काज

विनंती यह विरह व्याकुल प्रीत काज

"Vibrant Pushti"

कोयल गाये मयूर गाये गाये पपीता राधा

शुक गाये कबूतर गाये गाये तीतर राधा

यमुना के तट पर पीपल के पत्ते गाये राधा

गौचारण धूलि गाये गोप लकूटी गाये राधा

बंसी बट के सूर गाये गोपी पैजनीया राधा

राधा राधा राधा राधा राधा से जागे राधा

वृंदावन प्रीत नंदनी आनंद पीलाये आधा

व्रज रज से छूले तन हमें करदे व्रज ग्वाला

"Vibrant Pushti"

रज रज प्रीत की

रज रज परमानंद की

साथ चले तो नंदआनंद साथ निभाये तो प्रेमानंद

कृष्ण ही कृष्ण पुकारे यह मनवा

कृष्ण से ही आत्म कृष्ण जुडे तनवा

कृष्ण ही मेरा जीवन संग सखा

कृष्ण से ही चले श्वासों का चरखा

कृष्ण नयन नचाये होठ मचलाये

पैरों की माला से गिरिराज दौडाये

कृष्ण कृष्ण जपत से जीवन सुप्रत

कर जोड विनंती करू सदा दंडवत

"Vibrant Pushti"

दोस्तों के ख्यालों में दोस्त है

दोस्त के ख्यालों मे दोस्तों है

दोस्तों!

दोस्त से दोस्ती निभाने का ख्याल निखालस है,

दोस्ती से दोस्त करने का ख्याल पवित्रता है।

सलाम करते है ऐसे दोस्त को

सदा हमें परमात्मा करते है।

"Vibrant Pushti"

"चरणामृत" चरण + अमृत = चरणामृत।

चरण - चरण का अर्थ है जो योग्यता से खुद का चलन करे वह चरण। योग्यता से चलना या ने जो चलन से केवल पवित्रता प्रकटे, जो चलन से अंधकार नष्ट हो, जो चलन से भक्ति का सिंचन हो, जो चलन से शुद्धता का भाव जागे, जो चलन से अंधश्रद्धा दूर हो, जो चलन से ज्ञान की गंगा बहे, जो चलन से विश्वास संपादन हो, जो चलन से अविद्या पर विजय हो, जो चलन से परम संबंध हो। यह चलन का चरण योग्य है, और उनके चरण स्पर्श आत्मीय उत्कृष्टता है। जो चरण स्पर्श से दोषों का नाश और सद् विचार का उदय होता है। यह चरण स्पर्श अपने लिये अमृत का सिंचन करते है। यह अमृत या ने हमें जगत की माया, मोह, काम, क्रोध से सलामत रखते है।

"Vibrant Pushti"

सेवा सेवक तुम्हीं जानो

पुष्टि नवत्व तुम पहचानो

तेरे शरण मेरे जीवन सफल

धर्म यही है जो योग्य विचार को वृद्धि करे और योग्य क्रिया को समर्थन करके जिसने विचार और क्रिया की उनके दोषों को नष्ट करके उनके इष्टदेव प्रति गति करे यही रीत को प्रमय बल कहते है जिससे जीव तत्व का आत्म सिंचन होता है।

कितना गूढ रहस्य है अपने जीवन के पुरुषार्थ का और श्रीप्रभु की सृष्टि सृजन करने का उद्देश्य।

श्रीप्रभु हमसे सदा खेलतें रहे आनंद करते रहे और हम भी उनके आनंद में सह्धयायी बने।

वाह! मेरे प्रभु! वाह!

आनंद चित् भयो!

मुझे निर्गुण पथ दियो श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

सच कहे! आज का मनुष्य जीवन और मनुष्य क्या है? क्या खुद कोई राह पर चल रहे है या कोई राह का उन्हें पता ही नहीं?

यूंही भटकते रहते है जो कुछ कहे वो समझ कर कर लेता है आशियाना और कोई कुछ कहे वहां से उठा लेता है ठिकाना, यूँही जीते पूरी करे जिन्दगानी, क्या यही है आना जाना।

जागने के लिये मनुष्य है।

योग्य करने के लिये मनुष्य है।

जागे और जगाय जगाये े

कर्म का दिया

धर्म का पथ घडाये

हमारी दुनिया रचाये।

"Vibrant Pushti"

"श्री यमुनाजी"

पुष्टि मार्ग की धात्री है जो सदा हर पुष्टि तत्व या ने "वैष्णव" के लिये तरसती है,

जैसे सदा अपने प्रियतम कृष्ण के लिये।

प्रीत में द्रवित होना, प्रीत की तरस को छिपाना "श्री यमुनाजी" से शिखे!

हर बूँद में तरस

हर बूँद में प्यास

हर बूँद में आग

हर बूँद में शीत

हर बूँद बावरी

हर बूँद सांवली

हर बूँद में श्याम

हर बूँद में भक्ति

हर बूँद में शक्ति

हर बूँद में शरण

हर बूँद में गोकुल

हर बूँद में रास

हर बूँद में व्रज

हर बूँद में दर्शन

हर बूँद में कीर्तन

हर बूँद में पुष्टि

हर बूँद में सृष्टि

"जय श्री वल्लभ"

दंडवत प्रणाम!

"Vibrant Pushti"

"श्रीयमुनाजी" का स्वरूप पुष्टि मार्ग में भक्ति रस का द्रविभूत रसात्मक स्वरूप कहते है।

"पुष्टि मार्ग" में रसात्मक का अर्थ है रस की विविध अवस्था।

"Vibrant Pushti"

मैया जिये तेरे पुष्टि ही प्रकट्यो

जान मुझे मैं तु ही संवार्यों

"श्रीयमुनाजी" खुद रस स्वरूप है। "श्रीयमुनाजी" का प्राकट्य "मुरारी पद पंकज" या ने "परम ब्रह्म" पद - चरण से है। यही रसात्मक धारा कैसी होगी?

अदभुत अलौकिक अतूट अखंडित अखलित धारा।

जो केवल और केवल पुष्टि तत्व है। हम पुष्टि मार्गीय तत्व और हमें उनसे जुडना! ओहहह! सर्वोत्तम।

"Vibrant Pushti"

"श्रीयमुनाजी" रसात्मक द्रविभूत स्वरूप हमारे लिये हुए है। "श्रीयमुनाजी" पुष्टि जीव तत्वों के लिये ही यह भूतल पर प्रकट हुई है। पुष्टि जीवों का सिंचन करने। जब भी कोई जीव तत्व को सांसारिक दु:खों से द्रवित पाती है वह खुद द्रवित हो जाती है, क्यूँकि पुष्टि धात्री है।

रसात्मक स्वरूप से वह पुष्टि तत्वके रोम रोममें बस कर उन्हें विशुद्ध करके सर्व दोषों को नष्ट करती है।

यही रीतसे वह हर पुष्टि जीवको मधुर करती है और सदा व्रजमें वास करनेकी योग्यता प्रदान करती है।

"Vibrant Pushti"

"श्री राधा" भक्ति का अगाध समुद्र में से केवल एक बूँद से हमारा जीवन सार्थक हो जाय। प्रीत की अतूट धारा जिससे हर संग पवित्र हो जाय।

"श्रीराधा" का सानिध्य की सार्थकता यही है की हममें सदा उत्कृष्ट विचार और योग्य कर्तव्य निष्ठा जागे और जीवन सुगंध हो जाय।

"श्रीराधा" स्मरण, "श्रीराधा" पूजन, "श्रीराधा" स्पर्श,

"श्रीराधा" आत्म धारा भक्ति रस में पूर्ण परमात्मा कर जाय।

"Vibrant Pushti"

"मूल तत्व" या ने "परब्रह्म"

"परब्रह्म" या ने "परम संपूर्ण आत्मीय तत्व"

यही "परम संपूर्ण आत्मीय तत्व" से यह ब्रह्मांडो की रचना, सृष्टि का सर्जन, प्रकृति का उदभव, असंख्य जीव तत्वों की सर्जनात्मक रचना हुई है।

हम मनुष्य और हमारी साथ कहीं जीव तत्व है। यह जीव तत्व की सृष्टि में सर्जनात्मक जीवन सिद्धांत है जिससे हर जीव तत्व खुद की गति करता है। यह गति कर्मोनिधान और कर्मानुसार है। हमारी अंदर जागते हर विचार हमारी खुद की ही उपज हमारी लाक्षणिकता है।

"Vibrant Pushti"
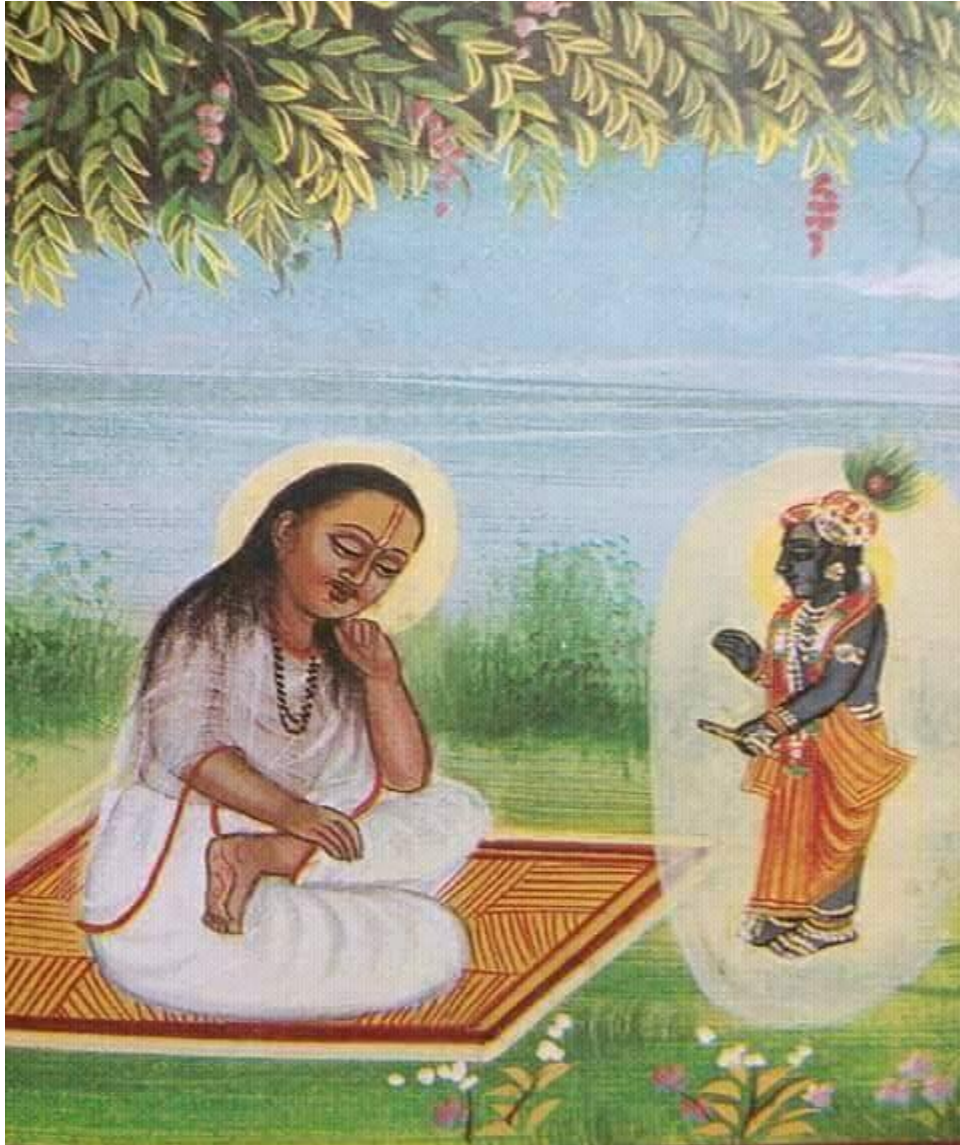
कहीं बार समझा

कहीं बार झुका

कहीं बार शांत रहा

कहीं बार सोचता रहा

कहीं बार मौन धरा

कहीं बार ध्यान धरा

कहीं बार सांसे भरी

कहीं बार घूट भरी

कहीं बार तरस खायी

कहीं बार महात खायी

कहीं बार भनक जागी

कहीं बार इंतजार भरा

कहीं बार उत्तर भरा

कहीं बार मन मनाया

कहीं बार जग मनाया

कहीं बार खुद लूटाया

कहीं बार धर्म लूटाया

कुछ जाने है प्रीत रीत को

हर पल जगाये विरह गीत को

"Vibrant Pushti"

" राधे राधे "

"व्रज" का अर्थ है

"व" + रज" = व्रज।

"व" "वैष्णव"

"व" "वल्लभ"

"व" "विठ्ठल"

"व" "विश्वास"

"व" "व्रत"

"व" "विरह"

"व" "विशुद्ध"

"व" "विज्ञान"

"व" "वियोग"

"व" "विवेक"

"व" "विजय"

जहां यह सर्वे "व" वहां हर रज में आनंद परमानंद सर्वानंद बसे और प्रीत लीला खेले।

हम भी कुछ ऐसा करे जो पल पल "व्रज रज" से खेले।

"Vibrant Pushti"

तडपत यह आग विरह की

जलाये मन तरासे तन कर्म की

न आये तुम पर तेरी आयी याद

प्रकटा गया ज्योत आबाद प्रीत की

सांस भरी है अब प्रीत योग्य धरने

धन छुटे जगत छुटे न तोंडु प्रिया की गांठ।

"Vibrant Pushti"

यह आंखे आंसुओं के लिये नहीं है।

यह आंखे झबक ने के लिये नहीं है।

यह आंखे बंध करने के लिये नहीं है।

यह आंखे सोने के लिये नहीं है।

"आंखे"

यह आंखे तो जागने के लिये है।

यह आंखे तो कहने के लिये है।

यह आंखे तो जगाने के लिये है।

यह आंखे तो हंसाने के लिये है।

यह आंखे तो शुद्धता की गहराई के लिये है।

यह आंखे तो सत्य पढने के लिये है।

यह आंखे तो प्रीत के इंतजार के लिये है।

यह आंखे तो योग्यता का इकरार करने के लिये है।

यह आंखे तो आत्मीय पहचान के लिये है।

यह आंखे तो दर्शन करने के लिये है।

यह आंखे तो अमृत रस पीने के लिये है।

"Vibrant Pushti"

"स्त्री जीव"

प्रथम तो एक सत्य समझना है की "स्त्री" कौन है?

ब्रह्मांड के हर एक जीव अयोग्य है।

जो कारिका में लिखा है

"पशुस्त्रीव्यतीरिक्त श्चेत"

यह सब ऐसी योनि के लिये कहा है जो मूढ है, अविचारी है।

"स्त्री" जो यह पूर्ण वर्ण प्रथा में यह तत्व को वस्तु समझा है। और जो वस्तु हो वह व्यवहारिक में समझा जाता है।

"स्त्री" तत्व ने कहीं बार मर्यादा भंग और खुद की ना समज ने कहीं बार यह जगत को संहारा है। उनकी कहीं रीतों से समाज बार बार भ्रष्ट हुआ है। इसलिये यह सब प्रमाणित से भगवान के विरक्त दशा में बाध रखा।

पर मेरे खुद के विचार से

यह कारिका अयोग्य है।

"स्त्री" तत्व तो योग्य और द्रढ तत्व है। जो संसार की सर्वोच्च और सर्वोत्तम तत्वों में उनहें समझना अति आवश्यक है।

"Vibrant Pushti"

हम जानते है। पर एक बात कहो यह "श्री सुबोधिनी" का विवरण किसने किया है वह कहो, कौन है उनके लिखने वाले।

अरे! यह जो अभी तुम पढती हो यह पुस्तक का विवरण किसने किया है?

हाँ! क्यूँकि यह विवरण

हमारी सोच से कोई ऐसे व्यक्ति ने लिखा है जो स्त्री तत्व को समझा नहीं है।

यह तो अति अलौकिक है।

"समाधि भाषा" क्यूँ है? और

"श्री वल्लभ" इन्हें कैसे समझे?

"समाधि भाषा" या ने जो समाधि में प्रकट हो कर सत्य का ज्ञान और भक्ति प्रदान करी।

"श्री वेदव्यासजी" ने कहीं वेद और वेदांत की रचना करी, पर उनका मन, तन और आत्मा को शांति और आनंद नहीं पा रहे थे। वह व्याकुल रहते थे।

इतने प्रखर ज्ञानी और सिद्ध पुरुष खुद को अधूरा समझते थे।

तब "श्रीनारदजी" ने "श्रीप्रभु" आज्ञा से "श्री वेदव्यासजी" को अलौकिक दृष्टि प्रदान करी।

यह संकेत "श्रीप्रभु" का था और स्व मुखे "श्रीप्रभु" ने रचा है, हर तत्व को शुद्ध करने।

"श्री मद् भागवत" "श्रीप्रभु" मुखसे प्रथम "श्रीनारदजी" को गुप्त ढ्रड भाव से कहा,

"श्रीनारदजी" ने "श्री वेदव्यासजी" को समझाया।

क्यूँकि "श्री वेदव्यासजी" केवल ज्ञानी थे उनमें भक्ति भाव जगाना था और ज्ञान और भक्ति का समन्वय से ही "श्रीप्रभु" प्रीत जागृत होती है।

तब "श्री वेदव्यासजी" ने समाधि धारण करी और समाधि में उन्हें "श्री मद् भागवत" लीला पायी, इसलिए यह समाधि भाषा है।

"Vibrant Pushti"

" श्री वल्लभ वल्लभ शरण धरो "

अंधकार का असर इतना गहरा जो कोई न छुटा जाय।

कब कोई कहे कब कोई सुने कब कोई कैसा देखा जाय।

पल पल खेलें पल पल बिछडे पल पल कहां से कहां जाय।

कौन क्या समझे कौन कौन समझाये कैसे समझा जाय।

कैसी विडंबना कैसी गति कैसी कैसी रीत उगती जाय।

कौन बचे कौन तरसे कौन कहां कहां पहूँचा जाय।

न कोई डर न कोई विश्वास न कोई किसीसे कहा जाय।

कैसी अंधेरी रीत जगत की जो न कोई जगाया जाय।

खुद को ही जागना खुद खुद का समझ कर नहीं तो

हर कोई मारा जाय।

हर कोई डूबा जाय।

हर कोई तुटा जाय।

हर कोई रहा ना जाय।

"जय श्री वल्लभ"

"जय श्री कृष्ण"

"Vibrant Pushti"

खेलत आज मोरा सुंदीर श्याम

नयन नचावत कमर लचकावत

होठ हिलावत गाल खिचावत

ओह! कैसे खेलत

ओहहहह कैसे खेलत

मोरा सुंदीर श्याम

हमें बुलावत हाथ पकडावत

नखरे दिखावत झांझर खनकावत

ओह! कैसे खेलत

ओहहहह कैसे खेलत

मोरा सुंदीर श्याम

"Vibrant Pushti"

"निरोध लीला" यह श्रीप्रभु की अलौकिक लीला है। यह लीला सर्वोत्तम लीला है। यह लीला में श्रीप्रभु अपने भक्त को जगत का प्रपंच को विस्मृत करते है या ने भूला देते है। कितनी अनोखी रीत दर्शायी है और सरल भी, जो जीव श्रीप्रभु की लीला का सदा स्मरण करे तो जगत के प्रपंच भूल जाये।

वाह! **सदा स्मृति तदा भक्ति तव सदा सुकृति।**

निरोध लीला में श्रीप्रभु भक्त को अपनी तरफ खींचते है या ने जो भक्त मूढ है अज्ञानी है नि:साधन है उन्हें सर्वथा से जागृत करके जीवन रीत में साथ निभाना और साथ निभाने से भक्त का उद्धार करते हैै।

यह लीला की पहचान अति आवश्यक है क्यूँ की यह ही प्रथम सोपान है जीवन को उत्कृष्ट करने का - **"सदा स्मृति तदा भक्ति तव सदा सुकृति"**

"Vibrant Pushti"

सदा स्मृति तदा भक्ति तव सदा सुकृति

जीवन के हर सूर और हर स्वर मिलना ही योग्य जीवन है। हर सूर आत्मा है और परमात्मा है, हर स्वर आत्मा और परमात्मा है। हर सूर और स्वर को ताल मेल करना ही योग्य कला है। यही कला को रीत - सिद्धांत - शिक्षण - संस्कार कहते है। हमारी सांसे हमारी धडकन के साथ मिल जाये तो हमारा जीवन जागता है, ऐसे ही हमारी हर सांस से धडकन, धडकन से सूर, सूर से स्वर एक हो जाये तो प्रकृति हमारी और हम श्रीप्रभु के।

"कान्हा" के बंसरी के सूर - "कान्हा" का स्वर ऐसे गुल गये की बंसरी तान से प्रकृति खुद उपर न्योछावर हो गयी और "कान्हा" की हर लीला मधुर हो गई।

"Vibrant Pushti"

मैं बंसरी तुम्हारी घनश्याम बनी आवो

मेरी परम प्रिया का श्याम बनी आवो

हमारे पास मकान, अन्न, कपडे, सदा अर्थोपार्जन याने कमाने के लिये अच्छा साधन जिससे गाडी, झर झवेरात, भरा भरा कुटुंब और समाजमें प्रतिष्ठासे हम अपना गौरव मानते है, खुद को योग्य समझते है।

सच!

पर जब प्रतिष्ठाकी बात करे तो हममें सुशीलता, संस्कार, विवेकता, स्पष्टता, शिस्तता, न्याय, सदभाव, सदगुणता, सरलता और सेवकता की जागृतता होनी ही चाहिए तब हम योग्य प्रतिष्ठित कहलाये।

"Vibrant Pushti"

हे नवनीत प्रिये !

नवनीत जगाया मोरे मन आत्म भाया

नीत नीत तेरे दर्शन पाया

"जय श्री कृष्ण" "श्री वल्लभाचार्यजी" ने यह मंत्र की रचना जब वह प्रथम मिलन से श्री "श्रीनाथजी" से जुडे थे तब उनकी आत्मीयता में से प्रकट हुआ था।

यह मंत्र की सामर्थ्यता और सार्थकता यही है की जब भी यह मंत्र का स्मरण और आत्मीय पुकार से अपनी अंदर से प्रकट हो तो हमारा भी मिलन श्री श्रीनाथजी से होता है।

कितना अदभुत! कितना अलौकिक!

वाह मेरे प्रभु! आपको साष्टांग दंडवत प्रणाम!

"जय श्री कृष्ण"

"Vibrant Pushti"

वादा किया तो वादा निभाया

वादा निभाया तो विश्वास जगाया

विश्वास जगाया तो प्यार जताया

प्यार जताया तो दिल रचाया

दिल रचाया तो ऐकरार बढाया

एकरार बढाया तो जीवन सजाया

"Vibrant Pushti"

तु आगे मैं पीछे

घडी घडी तेरा साया लिपट रहे तेरी छाया

"श्रीकृष्ण" प्राकट्य क्यूँ हुआ? कैसे हुआ?

"श्रीप्रभु" का प्राकट्य जो योग्य जीव है उनका प्रपंच दूर करने।

"श्रीप्रभु" का प्राकट्य भक्तों को "श्रीप्रभु" से एकात्म करने।

"श्रीप्रभु" का प्राकट्य लीला कर्म से सत्य और आनंद की पहचान करने।

"श्रीप्रभु" का प्राकट्य धर्म संस्थापन से जीव तत्वों की योग्यता की शिक्षा प्रदान करने।

"श्रीकृष्ण" प्राकट्य स्वरूप के प्रकार समझना अति आवश्यक है।

प्रथम - "श्री वसुदेवजी" की स्तुति से "परब्रह्म स्वरूप" - जो केवल सत चित् आनंद स्वरूप। क्यूँकी "श्री वसुदेवजी" सत्य स्वरूप है।

दूजा - "श्री देवकीजी" की स्तुति से "सम्प्रोक्त" स्वरूप" - जो केवल संपूर्ण प्राकृत लीला स्वरूप है।

तृतीय - स्वयं प्रभु "पूर्ण पुरुषोत्तम" स्वरूप जो केवल एक सत्य और एक परम भक्त को एकात्म करने का स्वरूप है।

चतुर्थ - लौकिक वत् शिशु - बाल स्वरूप जो लौकिक जगत का स्वरूप है।

कितनी अनोखी और अद्वैत लीला जिससे "श्रीप्रभु" पूरे ब्रह्मांड को स्पर्श करके सर्वे तत्वों का योग्यता से संकलन करते है।

यह एक ऐसा सत्य है जो हर जीव तत्व यह दिशा में गति करता है उन्हें "श्रीप्रभु" अवश्य उनके सानिध्य का स्पर्श करके उनके हर रीत में साथ रहते है।

"Vibrant Pushti"

"जगत जननी" कितना अदभुत शब्द!

ओहहह! एक ऐसी अनुभूति हो रही है और सारे तन में कंपारी हो रही है।

"जगत जननी" कौन? कौन है ये जो इतनी असर आज लिखते लिखते हो रही है।

"जगत जननी" तो वह ही है जिससे जन्म धारण करने से पहले और जन्म धारण करने के बाद ऐसी उच्चता भरे संस्कार और सार्थकता का सिंचन करती है जिससे यह जगत हमें कितनी भी विडंबना, दु:ख, तकलीफें, मुसीबतें, निष्ठुरता, दोष, अंधकार, दुष्टता, भ्रमणा पहोंचाये तो भी हम अडग, निडर और योग्य ही रहे।

"मा" का आंतरिक दुग्ध ही हमें ऐसे लोहे जैसे करदे की समस्त विद्या हम पान करके जगत की हर अविद्या को नष्ट कर सके, जगत की हर दुष्टता का नाश कर सके।

यह है हमारी **"जगत जननी" " माँ "**

तुझे सर्वाधिक, सर्व श्रेष्ठ वंदन।

"Vibrant Pushti"

"श्रीकृष्ण" का प्राकट्य से ब्रह्मांड में क्या क्या परिवर्तन आता है? और क्यूँ आता है?

जब परब्रह्म का प्राकट्य से सर्व प्रथम परिवर्तन काल में आता है। काल या ने समय, काल या ने जो जीव तत्व, भौतिक तत्व, भौगोलिक तत्व, पंच महा तत्व, मान्यता, धारणा, कर्म, मन, सृष्टि सबमें जो दुर्गति है उनमें परिवर्तन आता है। यह परिवर्तन से यह सर्वे तत्वों सूक्ष्मता से धीरे धीरे करके सत तत्व की तरफ गति करते है।

सर्वे तत्वों में एक उमंग, उत्साह, उत्तेजना, और कोई शक्ति का संचार होता है। यही आनंद हमें केवल योग्य और सत्य करने की प्रेरणा करते है, जिससे पार्दुभाव हुए परब्रह्म को उत्तम प्रकार के समांतर संयोजन मिलता है। यही संयोजन से अनेक प्रकार के संयोग जागते है। यही संयोग से सर्वे तत्त्वों योग्यता में परिवर्तन हो कर पूरे ब्रह्मांड को दुष्प्रभाव से दूर करते है या हर दोषों का नाश करते है।

यही तो माधुर्यता है "श्रीकृष्ण" प्राकट्य की, यही आनंद पाने के लिये हमें सदा तत्पर रहना है।

"जय श्री कृष्ण"

"श्रीप्रभु" प्राकट्य दिन आ रहा है तो हमें तन, मन, धन से तैयार रहना है।

"नंद घेरा नंद भयेगा

हमारे दिल में प्रकटेगा

तन मन से खेलेगा

हमारे आत्म से जुडेगा

हम भये कृष्ण मुरारी

वह भये भक्त गिरधारी"

"Vibrant Pushti"

" श्रीकृष्ण " प्राकट्य स्वरूप के प्रकार समझना अति आवश्यक है।

प्रथम - " श्री वसुदेवजी " की स्तुति से **" परब्रह्म स्वरूप "** - जो केवल सत चित् आनंद स्वरूप।

क्यूँकी " श्री वसुदेवजी " सत्य स्वरूप है।

" परब्रह्म स्वरूप "

जो केवल अति परम भगवदीय आत्मीय तत्व को ही दर्शन होता है।श्री वसुदेवजी "श्री वासुदेवजी" वंशज थे और यह "श्री वासुदेवजी ही परमब्रह्म के साकार स्वरूप थे या ने परम मूल सत तत्व। जो सदा विशुद्ध और अद्वैत थे। जो सदा **" श्रीप्रभुमय "** थे।

दूजा - "श्री देवकीजी" की स्तुति से "सम्प्रोक्त" स्वरूप" - जो केवल संपूर्ण प्राकृत लीला स्वरूप है।

"श्री देवकीजी" सम्प्रोक्त स्वरूप या ने जो परम आत्म तत्व प्रकृति को अपना आत्म बल से विशुद्ध और "श्रीप्रभु" की लीला में समन्वय होके "श्रीप्रभु" का कार्य सिद्ध करे।

प्रकृति और परब्रह्म को संयोजित करके जगत का अंधकार नष्ट करे।

तृतीय - स्वयं प्रभु **" पूर्ण पुरुषोत्तम "** स्वरूप जो केवल एक सत्य और एक परम भक्त को एकात्म करने का स्वरूप है।

" पूर्ण पुरुषोत्तम " जो खुद **" परब्रह्म "** जो केवल भक्त को आंतर चक्षु से साक्षात दिव्य स्वरुप दर्शन कराये, जो देखते ही अंधकार का सर्वनाश, और "श्री परमात्मा से आत्मा को एक करना।

चतुर्थ - लौकिक वत् शिशु - बाल स्वरूप जो लौकिक जगत का स्वरूप है।

" परब्रह्म " का जगत रुप स्वरूप जो पल पल की लीला से जगत के जीव तत्वों को अपनी तरफ खींचना, आकर्षण करना। जिससे जगत संस्कृत हो साक्षर हो, अनन्य हो, विश्वासमय हो।

जिससे जीव तत्वों के दोष दूर हो।

कितनी अनोखी और अद्वैत लीला जिससे "श्रीप्रभु" पूरे ब्रह्मांड को स्पर्श करके सर्वे तत्वों का योग्यता से संकलन करते है।

यह एक ऐसा सत्य है जो हर जीव तत्व यह दिशा में गति करता है उन्हें **" श्रीप्रभु "** अवश्य उनके सानिध्य का स्पर्श करके उनके हर रीत में साथ रहते है।

"Vibrant Pushti"

" हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे "

"श्रीकृष्ण" का स्वरूप पहचानना अति गुढ है, अति योग्य है, अति परम सर्वोत्तम, सर्वोच्च और मुख्य है।

यह जगत में जानने के लिये सामर्थ्यता किसमें है वह नहीं पता है। हा! इतना कहे सकते है की अगनित जीव तत्वों प्रयत्न करते है।

कहीं सामर्थ्य आचार्यजीओ ने यह स्वरूप की पहचान के लिये कहीं सेवा, तपश्चर्या, समर्पणता, शरणागतता की साम्प्रदायीक्ता की रचना खुद के अनुभूति से दर्शायी है। हम यही पथ या मार्ग पर खुद को संकलित करते है, पर कहीं अधूरप से हम रूक जाते है, छोड देते है, परिवर्तन कर देते है या अस्थिर हो जाते है, असमंजस में घिर जाते है या विश्वास खो देते है।

क्यूँकी हमारी संस्कृति, हमारी साक्षरता, हमारी विद्या, हमारी वृत्ति, हमारी कार्य दक्षता, हमारी विचारधारा, हमारी प्राथमिकता, हमारी प्रतिता, हमारी जिज्ञासा, हमारी निष्ठा, हमारी नियति, हमारी श्रद्धा, हमारी मान्यता, हमारी जागृतता, हमारी भ्रमणा, हमारी शिस्तता, हमारी पद्धति, हमारे रीत रिवाज, हमारी जीवन शैली, हमारा व्यवहार, हमारी धारणा, हमारी सक्षमता, हमारी दीर्घता, हमारी विशिष्टता, आदि हम योग्यता से नहीं जानते और न कोई योग्यता से शिक्षित करें - संस्कृत करे - संस्कार करे।

न कोई साधन की पहचान और न कोई साधन की उपयोगिता की आवडत।

"अधूरा ज्ञान से अधूरी समझ

अधूरा मानव से अधूरी जिदंगी

अधूरा विचार से अधूरा कार्य

अधूरा समाज से अधूरा धर्म

हम अधूरे तुम अधूरे कैसे होंगे पूरे

यही विडंबना जन जन की कौन किसको ढूँढे?"

"Vibrant Pushti"
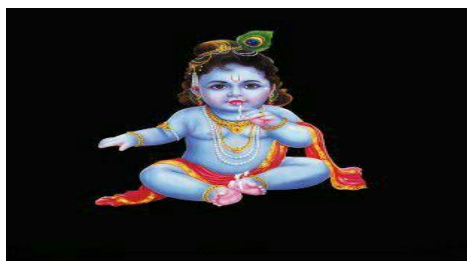
"श्रीकृष्ण" के स्वरूप की पहचान के लिये कहीं आचार्यों ने कहीं पद्धति से परमोत्तम सिद्धांत रचे है, जो सूक्ष्मता से पहचाने तो हम कहीं क्षमता पा सकते है। यह सूक्ष्मता हम **"लब्धस्य परिपालन"** सिद्धांत से खुद को पहचान कर, खुद में परिवर्तन करके ही पा सकते है। यह परिपालन में श्री आचार्यजी के मार्गदर्शन से और खुद की केलवनी से ही पा सकते है। हमारे श्री आचार्यजी हमें योग्यता तब ही शिखायेंगे जब हम द्रड हो, जिज्ञासा सभर हो, योग्य परिपालन में निश्चयी हो, अडग हो, स्थिर हो, कृतकृत्ज्ञी हो।

हमें हर समझ सकारात्मक से करे, सिद्धांत को समझ कर खुद को सिद्धांत का मर्म अनुसार करना हो, हममें अनन्यता का संचार हो जिससे हमारा विश्वास योग्य दिशा तरफ ही गति करें। जिससे हमारा जगत का प्रपंच का नाश हो और हम "श्रीकृष्ण" का योग्य स्वरूप पहचाने।"श्री मद् भागवतजी" "श्रीकृष्ण" स्वरूप का सर्वोच्च और सर्वोत्तम स्पर्श कराते है।

"श्री वेद व्यासजी" ने मंगलाचरण से ही सूक्ष्मता का स्पर्श शुरू किया है....

"श्रीकृष्णं सच्चिदानंद दशलीलायुतं सदा।

सर्वभक्तसमुध्द्वारे विस्फुरन्तं परं नुमः।।"

"श्रीकृष्ण सत् चित आनंद स्वरूप है, जो सदा दशविध लीला से संयुक्त है, जो ब्रह्मांड के सर्व भक्तों के समुद्धवारार्थ के अलौकिक सविशेष रीति से स्फूर्तिमान हो रहे है यहीं "परब्रह्म श्रीकृष्ण" के मुख्य रूप को हम नमन करते है।

या ने जो मूल तत्व रुप सदा दशलीला युतं या ने नित्य दशलीला में युक्त हो, समाविष्ट हो, समन्वय हो, संयोजित हो, एकात्म हो।

"परब्रह्म श्रीकृष्ण" सर्वे भक्तों के समुद्धवारार्थ या ने समांतर, समधुर, सुयोग्य, विशुद्ध, पवित्र आत्म द्वार पर सविशेष रुप से विस्फुरन्तं या ने अनंत रुप से सदा विस्फुरते हो यह मूल तत्व रुप को हमारा परम नमन हो।

"Vibrant Pushti"

"मूल तत्व" का प्राकट्य कहीं स्वरूप की लीला से होता है और उनका उदेश्य समय या ने काल की परिस्थिति पर आधारित है।

जो स्वरूप का प्राकट्य है उनकी अवतार लीला का प्राधान्य ब्रहमांड के काल जीव तत्वों पर भी आधारित है। क्यूँकी अवतार को लीला स्वरूप के प्रमय बल द्वारा ही जीव तत्वों का उद्धार करना है, और यह प्रमय बल लीला अवतार के बाद अवतार रुप के नाम स्वरुप में परिवर्तन हो कर स्मरण से भी उद्धार करना है।

आज हम "कृष्ण" के अवतार रुप नाम स्वरुप से जुडने की चेष्टा करते है, जिससे यह "कृष्ण" नाम स्वरुप हमें "परम मूल तत्व" का स्पर्श करवा कर प्रमय बल से हमारा जगत प्रपंच तोडता है और हमें योग्य करते है।

आज हम भौतिक सुख, भौतिक तत्वों के लिये क्या क्या नहीं करते है?

पर सच कहे की अगर हम "परम सत तत्व" के साथ ही जुडने या एकात्म होते है तो भौतिक सुख अपने आप आता जाता रहता है पर आत्मीय आनंद का बीज से जो वट वृक्ष रचाता है वह जन्म जन्मों तक हमें सलामत रखता है, यही मूल रहस्य है जीवन का।

"कृष्ण" "स्वरूप सदाय जानती"

संस्मरण करती, संकीर्तन घडती

जागृतता भवति, तनमन विशुद्धती

विचार संस्मृती, कर्म फल संस्कृतती

आनंद उदभवति, परमानंद स्वीकृति।

"Vibrant Pushti"

आकाश का बहता सागर शीतलता बरसाता है

धरती का बहता सागर धन बरसाता है

तन का बहता सागर स्पंदन बरसाता है

मन का बहता सागर सुविचार बरसाता है

आत्मा का बहता सागर माधुर्य बरसाता है

"Vibrant Pushti"

सूरज की उगती काया

रॉम रॉम जागे कृष्ण कन्हैया

एक एक किरण एक एक स्पंदन

रॉम रॉम खिले पंकज

असर तो है कोई जो कहीं भी होती है

कहे नहीं सकते

यह तन की असर है

यह मन की असर है

यह आत्म की असर है

"Vibrant Pushti"

"स्वतंत्रता" कितना सर्वोत्तम शब्द है। सुनते ही उमंगें जागती है तरंगे दौडती है। हम हिन्दूस्थानी स्वतंत्र है यह गौरव की बात है, खमीर की बात है, शान की बात है, सन्मान की बात है।

हमारी पहचान है-तिरंगा

हमारी संस्कृति है-तिरंगा

हमारी एकता है-तिरंगा

हमारी वीरता है-तिरंगा

हमारा सौभाग्य है-तिरंगा

हमारा सर्जन है-तिरंगा

हमारा संकल्प है-तिरंगा

हमारा कर्म है-तिरंगा

हमारा धर्म है-तिरंगा

हमारा शृंगार है-तिरंगा

हमारा रंग है-तिरंगा

हमारा विश्वास है-तिरंगा

हमारी क्षमा है-तिरंगा

हमारी शक्ति है-तिरंगा

हमारी भक्ति है-तिरंगा

हमारा वंदन है-तिरंगा

हमारा अमन है-तिरंगा

हमारा आचल है-तिरंगा

हमारी रक्षा है-तिरंगा

हमारा अर्चन है-तिरंगा

हमारी पूजा है-तिरंगा

हमारा दर्शन है-तिरंगा

हमारी जागृतता है-तिरंगा

हमारी प्रीत है-तिरंगा

हमारा तन-मन-धन है- तिरंगा

हमारा दर्पण है-तिरंगा

हमारा प्राण है-तिरंगा

हमारा गीत है-तिरंगा

हमारी जाति है-तिरंगा

हमारी ख्याति है-तिरंगा

हमारी सृष्टि है-तिरंगा

हमारा सिद्धांत है-तिरंगा

हमारा संगीत है-तिरंगा

हमारा तिलक है-तिरंगा

हमारी अखंडितता है-तिरंगा

हमारा स्वाभिमान है-तिरंगा

हमारा आदर्श है-तिरंगा

हमारा सत्य है-तिरंगा

हमारी संपूर्णता है-तिरंगा

हमारा स्वरूप है-तिरंगा

हमारी शिस्त है-तिरंगा

सलाम करते है तिरंगा को जो हमें स्वतंत्र बनाय

सुंदर सुशील स्वच्छ है तिरंगा जो गर्व से हमें लहराय

हिन्दूस्थानी नाझ है तिरंगा हर पल हर रीत निभाय

सर्व दिशा जगत में तिरंगा प्यारा हमारा बटाय

आओ रखें लाज तिरंगा की हर जन खुद लूटाय।

"Vibrant Pushti"
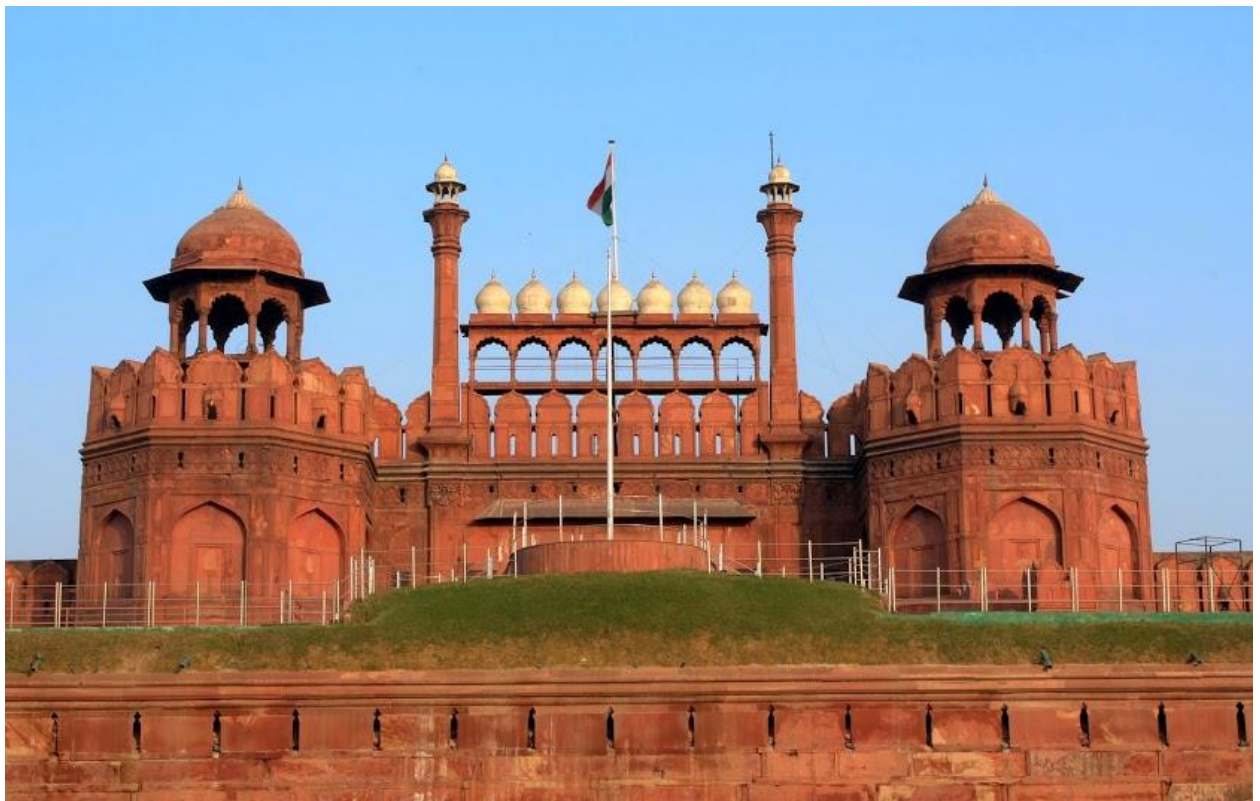
मेरा हिंदुस्तान

तेरा हिंदुस्तान

हमारा हिंदुस्तान

तिरंगा की छाव में

हिमालय की छत्र में

गंगा की मधुर शुद्धता में

श्रीकृष्ण की व्रज भूमि में

हिन्दू धरती की संस्कृति में

भारत माता की कोख में

सागर सिंचे सारे तन मन में

जन्म जागा है यह आलम में

हम में हिन्दूस्थान!

हर जान हिन्दूस्थानी।

सुंदर करेंगे सुनहरा करेंगे

स्वच्छ करेंगे स्वस्थ करेंगे

हमारा प्यारा हिन्दूस्थान!

यही कसम है

हम जागे जागे हिन्दूस्थान

एक होकर खिलायें गुलिस्ताँ।

"Vibrant Pushti"

मन काहे न धीर धरे

संग कान्हा

नयन में नाच करे

मधुर सी मुरली

मधुर तान धरे

होठ पुकारे कृष्ण कृष्ण

अंग अंग प्राण भरे

मन काहे न धीर धरे

हे मन मोहना!

अब नहीं छोडना

प्रीत की रीत धरे

मन काहे न धीर धरे

"Vibrant Pushti"

कृष्ण कृष्ण करत मनवा कौन मनाये अब?

न कोई खेल चाहे न कोई चाहे रमत

दौडे यहां दौडे वहां पर करे कृष्ण गान

कृष्ण कृष्ण करत मनवा कौन मनाये अब?

मधुर सामग्री मधुर फल मधुर फूल पधरायी

न चाहा न माना न देखा एक झलक

एक रटण एक इशारा मांगे कृष्ण नाम

कृष्ण कृष्ण करत मनवा कौन मनाये अब?

धून गाया कीर्तन गाया सेवा रीत बहायी

मन गाया तन नचाया कृष्ण प्रीत रचायी

मन मुस्काया मन लहराया कृष्ण कृष्ण ही पाया

कृष्ण कृष्ण करत मनवा स्थिर मनाया अब।

"Vibrant Pushti"
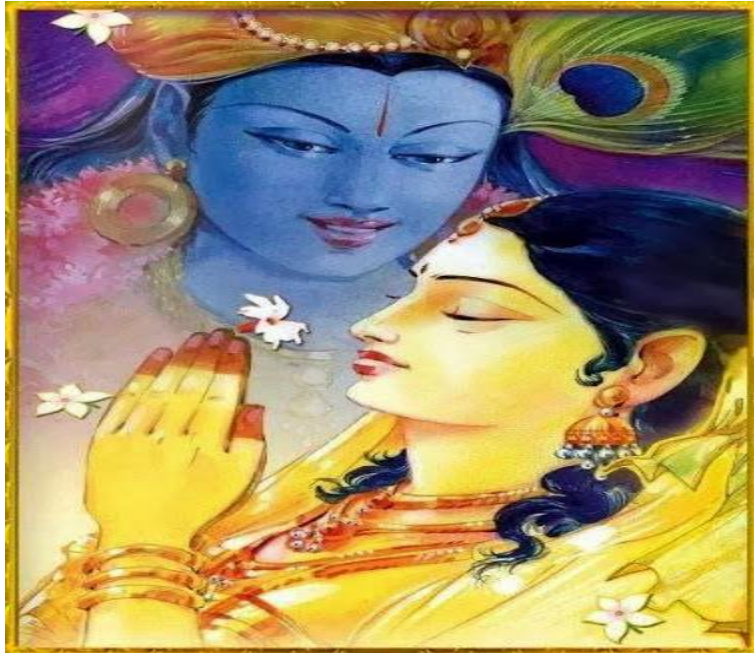
"श्रीब्रह्माजी" "वेद" दर्शन में कहते है कि जब सृष्टि की रचना के कृत युग में सर्व लोक में सर्व जीव तत्वों एक समान थे न कोई देव, न कोई दानव, न कोई मानव, न कोई गंधर्व, न कोई यक्ष, न कोई राक्षस थे। सर्व जीव समान और सदाचारी थे।

न कोई वर्ण था ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र क्यूँकि सर्व सदाचारी, तपस्वी, ज्ञानी, भक्ति ढ्रड और अखंडिता परिणामी थे।

काम, क्रोध, लोभ, मोह से पर और सर्वाधिक प्रीति सभर थे।

ओहह! सर्वोत्तम और सर्वोच्च था तो यह सृष्टि में यह दोष उदभवे कैसे?

ऐसी कैसी अवहेलना हुई जो सारी सृष्टि में उत्पात मच गया? क्या हुआ ऐसा जो सारी सृष्टि में हलचल मच गई? ऐसा कौनसा खेल रचा गया जो सारी सृष्टि हैरान?

कहीं शास्त्र, कहीं विकास, कहीं विज्ञान, कहीं कथायें, कहीं सिद्धांत, कहीं धर्म, कहीं परमेश्वर, कहीं कहीं और कहीं रचे गये।

और हम......

"Vibrant Pushti"

एक बार वल्लभ हमसे नजर मिलाये

नजर नजर से तुम्हें दिल से मिलाये

दिल मिलाके हम तुम्हारे तुम हमारे

यहीं ख्वाहिश है नजर से नजर मिलाने की

"Vibrant Pushti"

वल्लभ निकट निकट तेरी आश

वल्लभ रॉम रॉम तेरी प्यास

तु ही पुष्टि तु ही सृष्टि

तु ही धर्म आधार

रुठे रहो राधा हम कैसे मनायेंगे

कैसे मनायेंगे कितना तडपायेंगे

नयनों की प्यास कैसे बुझावोंगे

होठों की थरथराहट कैसे छिपायेंगे

धडकन की अगन कैसे शमावोंगे

मिलने की कसम कैसे निभावोंगे

"Vibrant Pushti"

तुम रुठी रहो राधा हम कैसे मनायेंगे तुम्हें

कैसे मनाये कैसे समजे कैसे कैसे हम तडपे

नयन प्यास बरसाये बरसात

कैसै कैसे हम भटके

तुम रुठी रहो राधा हम कैसे मनायेंगे तुम्हें

चंदा रुठे पंखी रुठे रुठे नभ के तारें

दिल की धडकन प्रीत पुकारे

कहाँ कहाँ तुम्हें ढूँढे

तुम रुठी रहो राधा हम कैसे मनायेंगे तुम्हें

"Vibrant Pushti"

हमारा जन्म

1. भूमि की रक्षा करने

2. योग्य सिद्धांत से जीने के लिये

3. आनंदित जीवन रचने

4. धर्म की रक्षा और संस्थापन करने

5. वातावरण शुद्ध करने

किया है?

या

कुछ कुछ ओर भी है और हम जीते है?

"Vibrant Pushti"

राधा के ख्यालों में

प्रियतम के ख्यालों में

खुले नहीं पलकें होठ यूही मलके

नयन नहीं बरसे होठ यूही तरसे

कैसी कैसी प्यास कैसी कैसी आग

धडकन धडक धडक मन मचल मचल

सांसें यू सिसके दिल तडप तडप

"Vibrant Pushti"

एक एक से एक

तुझमें मैं मुझमें तु

झुले झुले रे मेरे परम प्रिय रे

मेरे नयनों से झुले मेरी पलकों से झुले

झुलाये नयनों की पलकों छाँव में रे

झुले झुले रे मेरे परम प्रिय रे

निकुंज में बिछावुं यमुना तट पर सजाये

सजाये फूलों फल पत्ते की छाँव में रे

झुले झुले रे मेरे परम प्रिय रे

सोना से सजाये चांदी से सजाये

सजाये नव लख हिरला की शृंगार में रे

झुले झुले रे मेरे परम प्रिय रे

"Vibrant Pushti"

"राधा कृष्ण" नाम एक अलौकिक प्रीत

बार बार छूये कुछ हमसे हो ऐसी प्रीत

यही जगत में दोनों रहे थे मन के मीत

करते रहे है नाम स्मरण करदे मन मीत

तडप तडप कर अंग जगाई विरह गीत

करदे इशारा प्रीत रीत हम तुम्हारी होई।

"Vibrant Pushti"

मनुष्य जीवन का एक सिद्धांत कहते है

"मनुष्य आत्मीय है, उनका शरीर आत्म तत्वसे संयोजित है। आत्म तत्व मनुष्य शरीरमें निरूपित है।"

यह "आत्म तत्व" जगत के कोई भी "आत्म तत्व" से जुड सकता है, समरस हो सकता है।

यह ऐसी रीत है, जो रीत से ही परमात्मा से समरस हो सकते है, एकात्म हो सकते, जुड सकते है, संयोजित हो सकते है।

यह रीत अपने आप और उसी पल जागती है जब वह आत्मीय शरीर ने खुद को विशुद्ध, सुनित्य, नि:संदेह, निस्वार्थ और निष्कपट प्रीत धारा जतायी होगी वह "आत्म तत्व जगत का कोई भी आत्म तत्व से वह एकात्म हो ही सकता है।

"Vibrant Pushti"

जो तेरे मन में वो मेरे मन में

जो मेरे मन में वो तेरे मन में

"मधुराधिपते रखीलं मधुरम्:"

मधुराधिपते - मधुर के आधि पति - मधुर के आधि पते।

ब्रह्मांड में जितना भी मधुर है उनके आध्य पति - संपूर्णता से उनका ही सामर्थ्य, संपूर्णता से जो सदा मधुरप बहावे - मधुरप प्रदान करें - मधुरप पिलावे वह मूल स्वरूप हमें सदा मधुर ही रखते है। हमें सदा मधुरप रखने के लिये सदा कार्य रत है। जिनके साथ मधुरप की अखंडितता है, जिसका स्त्रोत सदा बहता रखतें है।जिससे हम सदा मधुर ही रहे।

ओहहह! कितना ख्याल रखतें है।अपने अंश को न पल भर के लिये मधुरता न मिले इतने तत्पर रहते है।कितना अलौकिक है **"मधुराधिपते रखीलं मधुरम्"**

"मधुरम्" का अर्थ है अखलित और विश्वास पूर्वक मधुर करना ही करना - रखना ही रखना।

"Vibrant Pushti"

"पुष्प" कहीं प्रकार से है।

हमारा अक्षर पुष्प है

हमारी प्रार्थना पुष्प है

हमारा शब्द पुष्प है

हमारा विचार पुष्प है

हमारी द्रष्टि पुष्प है

हमारा प्रणाम पुष्प है

हमारा दंडवत पुष्प है

"Vibrant Pushti"

हम हर बार जिक्र करते रहते है पुराने शास्त्र, द्रष्टांत और उनसे जो सिंचन पाते है, जीवन की शैली, जीवन की परियोजना करते रहते है। इसका अर्थ यह हुआ कि पुराने जीवन चरित्र हमसे योग्य और शिस्त बद्ध था। तब ही वह समाज उच्च था।

सच

तो हमें भी यह करना ही चाहिए, आजकल हम बार बार बहुत कुछ पल पल में बदलते रहते है - समझ लेना "बहुत कुछ"

तो क्या हाल होगा?

यही ही "जो बार बार बदले वह खुद न कभी सुधरे"

आजकल जो भी द्रष्टांत देते है

ये बाजु वाला का देखो!

"यही देखते देखते हम कुछ नहीं देखत" हो जाते है।

ओहहह!

"Vibrant Pushti"

सोचे ऐसा की कोई तो था जगत में जो दुनिया को जीतने निकला था

हम एक दिल जीत के तो जताये

"Vibrant Pushti"

सोचते ही सोचते मैं तुझमें खो गया

मैं तु हो गया तु मेरा हो गया

तोसे कहे मनवा कुछ

जागे जीयरवा में आग

पल पल को जलाया

तन तीनखा की रोशनी

रोमे रोम से पूकारे

बेला मिलन रचो साँवरिया

अब न रहे ये बावरीयां।

"Vibrant Pushti"

"पुष्प" पुष्प ऐसा संकेत और शुद्ध पवित्र सहृदयस्थ है जो तन मन और धन से प्रतिकात्मक रखता है।

"पुष्प" कहने से

ओहहह! क्या कहूँ!

फूल और पुष्प में उत्तम तफावत है।

हम मालियाजी फूलों से गुँथते है, हम सजावट फूलों से करते है।

पुष्प से मालियाजी नहीं होती है। पुष्प से सजावट नहीं होती है।

फूलों के रंग सच में सुशोभन और महक के लिये है।

पुष्प प्रतिकात्मक है फूल शृंगार सूचक है।

"Vibrant Pushti"
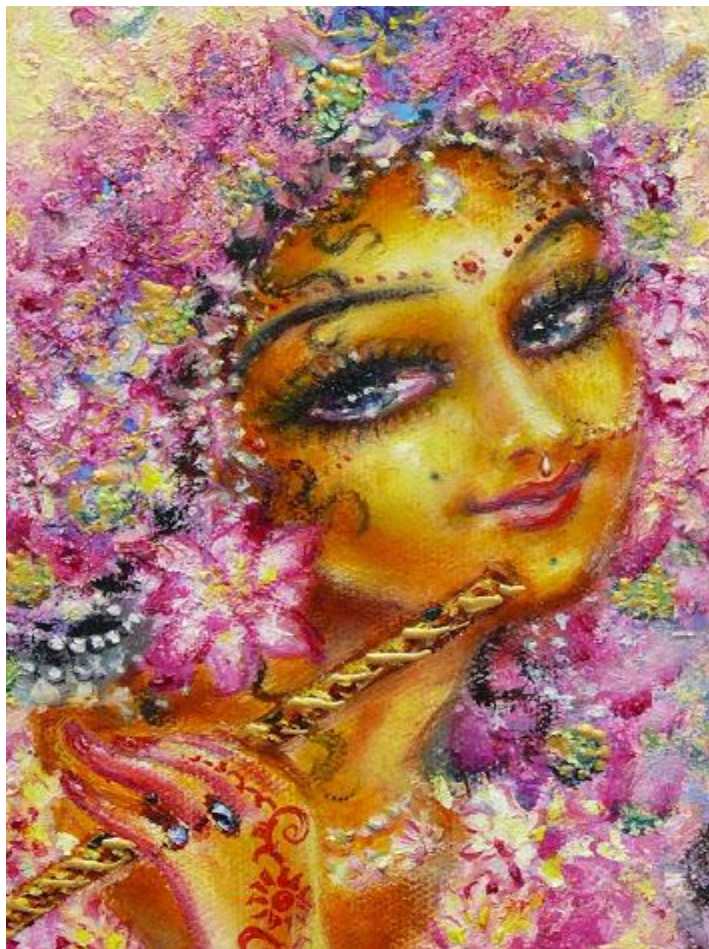
"तन - मन - धन" क्यूँ है?

तन - जो सदा तनुजा सेवा से सिद्ध हो।

तन - जो नित्य तनु नवत्व हो।

मन - जो सदा मधुर हो।

मन - जो सदा शुद्ध जिज्ञासा रखता हो।

धन - जो सदा समर्पित हो।

धन - जो सदा सेवाधर्मी हो।

"तन - मन - धन" क्या है?

तन - पुरुषार्थ करना, ब्रह्मचर्य से जोडना।

तन - संसार सागर तैरना।

मन - स्थिर करके संसार जीतना।

मन - मानसी सेवा करना।

धन - योग्यता का अर्थो पार्जन साधन।

धन - समांतर उपयोग धरना।

"Vibrant Pushti"

खेलत आज सुंदर श्याम यह अखिंयन में

नयन नचावत नये नये रंग दिखावत

तन मन रुप रंग भरी होली खेलावत

रंगायी रंग में साँवरिया खुद भयी साँवरि

"Vibrant Pushti"

चुटकी सी सिंदूर पहनाया

तु मेरी हो गयी मैं तेरा हो गया

रंग रंग से श्याम रंग ढा लिया

श्याम की श्यामा श्यामा का श्याम हो गया

समझाये समझना है समझ न उलझन होय

न समझ कर या आधी समझ कर समझ उलझन होय

कैसा जीवन कैसी रीत ये जो बार बार सुलझ उलझ होय

जो सुलझाये समझ समझ कर उन्हें भी उलझन में डूबोय

जगत की रीत सदा जीये सब उलझ उलझ के खुद सुलझ कर जीय।

पल पल जाग उलझ सुलझाये

थक गये हार गये भाग गये

मुस्कान भये उत्तम सुकून होय

मतवाली दुनिया पल पल ही सोय

"Vibrant Pushti"

झुलत पिया मेरे मन के हिलोरें से

मुस्कात मुखडा मेरी प्रीत अदाओं से

निगाहों से निगाह चुराने की सजा

बार बार हम पर बरसा रहे है,

तन के टुकडे सजावुं सजन पर

प्रीत की सजा बहावुं सजन पर

फिर भी हम पर खुद को लूटा रहे है।

"Vibrant Pushti"

झुलत तन झुलत मन झुलत जीवन झुलत प्रेम संगीत

"विचार" बिज है, जो बिज हम अपनी पहचान प्रमाणित उगाते है और वृक्ष करने की कोशिश करते है।

यह बिज कैसा है?

यह बिज से कैसा वृक्ष सिंचित होगा?

यह वृक्ष से कैसे फल लगेंगे?

यह फल से मेरी आसपास कैसे फल खाने वाले बसेंगे?

सोचें कि हमारी आसपास कितने मनुष्य है जो कितने विचार उगाते होंगे, और मेरी परिस्थिति कैसी होगी? सबकी परिस्थिति कैसी होगी?

ऐक विचार से यह हालत तो क्रिया से क्या होगा?

उत्तम विचार ही ऐसी रीत है जिससे हम अपने तन मन को सुशोभित करके सदा जीवन प्रकाशित हो।

"Vibrant Pushti"
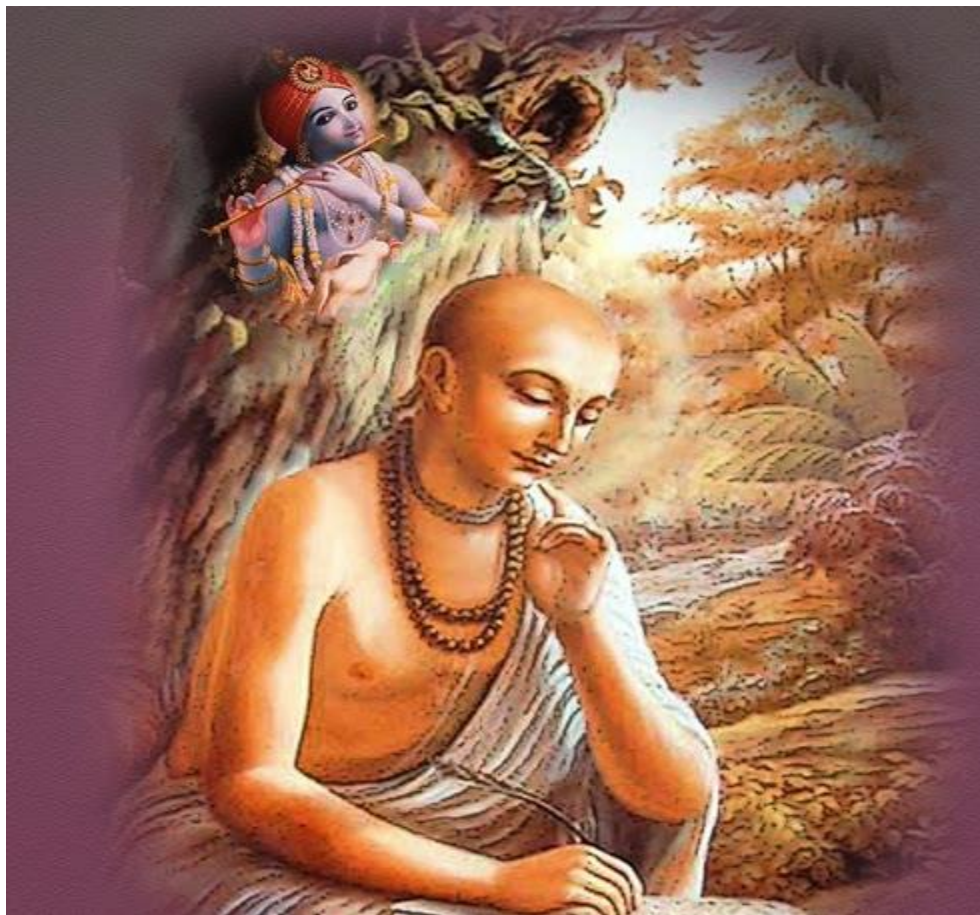
जीवन का हर पल हमें मौका देता है, जो मौका समज जाता है वह मौका से खुद का जीवन संवार लेता है और जगत को जीत जाता है।

ढूँढ लो खुद के लिये मौका और करलो दुनिया मुठ्ठी में!

मौका पैसों के लिये नहीं सोचना, भौतिकता के लिये नहीं सोचना, खुद को जागने के लिये और श्री प्रभु प्रीत पाने के लिये सोचना, क्यूँकि जीवन सार्थक करना है।

"Vibrant Pushti"

हे परब्रह्म ! तेरा ही गुण गायो

तुझसे ही मैं पठार्यों

जग जग पुष्टि जगाई

भूतल भूतल परिक्रममा जगाई

गृह गृह सेवा जगाई

जन जन वैष्णवता जगाई

तेरा ही स्वरूप दर्शायों

जन में तेरा ही रूप जगायों

निकुंज में बिराजे "श्रीनाथ" प्यारे प्यारे

नीली घटा में रंग बिरंगी फूल से सजाया है मेरा तन निकुंज,

जिसमें समर्पित किया मेरा मन,

जो मन से गाये रोमे रोम कीर्तन,

कीर्तन से डोले मेरा जीवन,

मेरे आत्म प्रिये पधारे आंगन।

"Vibrant Pushti"

नीले आकाश रंग छायी पिछवाई, कहती है विशालता में ही बसती है परब्रह्म की निकुंज।

नीला आकाश मेरा जीवन है

निकुंज मेरा तन है, जो सजाया है हमनें अपने अंग अंग से, हर अंग निकुंज की पत्ते है और रंग बिरंगी फूल मेरे तन के आभूषण है जो संस्कार, शिस्त, सदाचार, पवित्र से सजाया है।

निकुंज भरे यह तन मेरा गोकुल है, जिसमें बिराजे कान्हा मेरा प्रिय वर है, नंदबाबा और यशोदाजी मेरे सास ससुर है, गोप गोपीओं मेरे ननंद नंदोई है, पंखीओ मेरे देवर है।

हम सदा उनकी सेवा करेंगे।

"Vibrant Pushti"

तरमाज्जीवा: पुष्टिमार्गे भिन्ना एव न संशय:।

भगवद्रूपसेवार्थ तत्सृष्टिर्नान्यथा भवेत्।।

पुष्टिमार्गिय जीव क्या है? समझना अति आवश्यक है। यह जगत में कितने ही पोकार के जीव है, इनमें पुष्टिमार्गिय जीव भिन्न है। क्यूँ भिन्न है? क्यूँकि यह जीव में सेवा, दया, दिनता, सरलता, निष्कपटता, निस्वार्थता समर्पणता का भाव होता है। जीव केवल भगवदीय कार्य करने हेतु ही जन्म धारण किये हो।

जीवकी भिन्नता यही है की सदा अपने मूलभूत लक्ष्य श्रीप्रभु सेवा अर्थम् - भक्त रक्षा अर्थम् ही जीते है।

जो जीव को देखत नयन धीर न समाय। या ने जो जीव को देखते ही अपने नयन लालायित रहे, अतृप्त रहे, आकर्षित रहे, आनंदित रहे।

जीव के विचार, जीव की क्रिया केवल श्रीप्रभु भावित, श्रीप्रभु ज्ञानित, श्रीप्रभु प्रकाशित हो यह जीव पुष्टि जीव है।

"Vibrant Pushti"

हे प्रभु पुष्टि जीव परखना

गिरिराज धरण प्रभु तुम्हारे शरण

वल्लभ तुम्हारे चरण तुम्हारे चरण

गोवर्धन नाथ धरण प्रभु तुम्हारे शरण

विठ्ठल तुम्हारे चरण तुम्हारे चरण

गिरि परिक्रमा करण प्रभु तुम्हारे शरण

श्रीनाथजी प्रभु चरण तुम्हारे चरण

अष्टसखा गाये किरण प्रभु तुम्हारे शरण

"Vibrant Pushti"
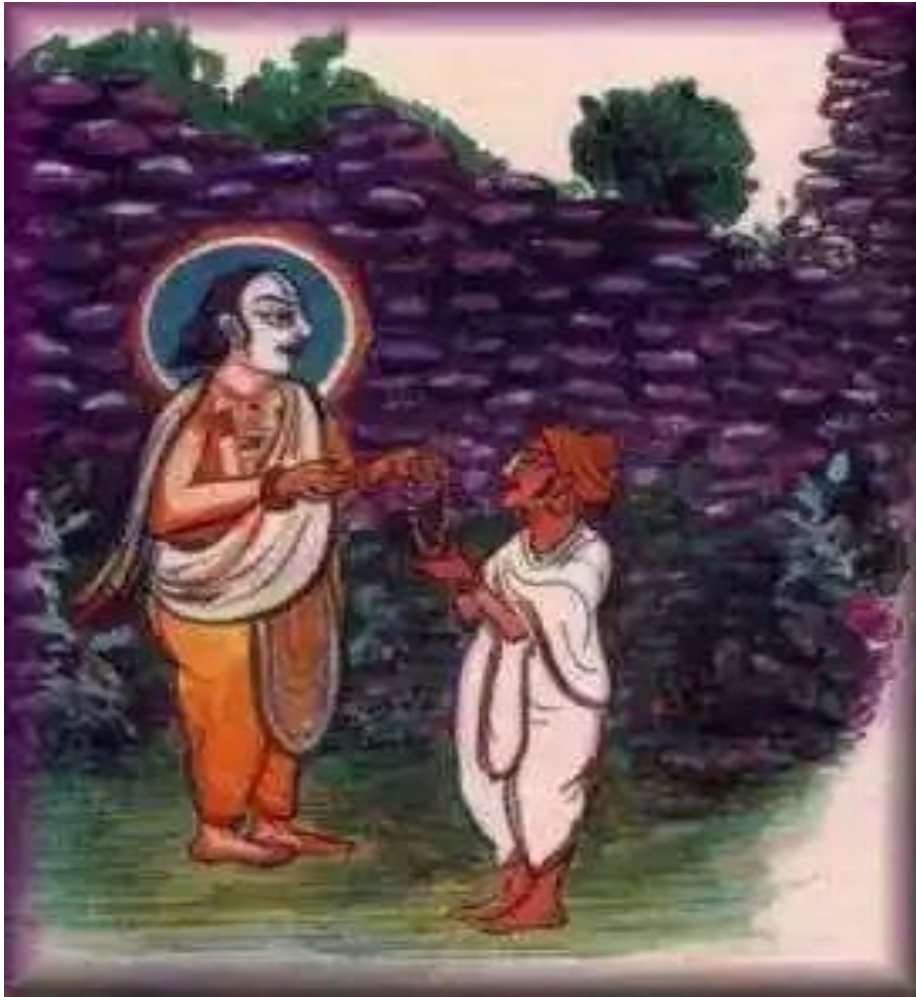
" गिरिराज शरण की जय "

अनुसंधान अनुसंधान अनुसंधान अनुसंधान

हमारा जीवन अनुसंधानों से भरा है और जी भी रहे है अनुसंधानों से।

हमारी हर सोच में अनुसंधान,

हमारी हर क्रिया में अनुसंधान,

हमारी हर भविष्य व्यवस्था में अनुसंधान,

हमारा हर वर्तमान जीवन में अनुसंधान।

यह अनुसंधान क्या है?

यह अनुसंधान है जीवन और जगत का भूतकाल।

हमारी हर धारणा अनुसंधान से

हमारी हर मान्यता अनुसंधान से

हमारी जीवन शैली अनुसंधान से

हमारा धर्म अनुसंधान से

जो जिसने किया या नहीं किया हो फिर भी अपनी मन स्मृति में जागृत करके कुछ भी बंधारण बांधना, यह बांध के उनमें अपनी वृत्ति को संयोजित करके विचार, क्रिया करना।

हमारी वृत्ति हमारा चारित्र्य उपर निर्भर है और यह वृत्ति से हम पल पल कहीं अनुसंधान बांधते है और जीवन व्यतीत करते है।

जिसने खुद का चरित्र साक्षर विचारों, साक्षर साथीओं, साक्षर चरित्रों से किया हो उनका अनुसंधान योग्य होता है।

"Vibrant Pushti"

हमारे जितने विचार और जितनी क्रिया में निष्ठा और निष्पक्ष नहीं होगा तो ही हमारा विचार और क्रिया को गति मिलेगी।

हम हिंदुस्तानी को हर तरह से गति नहीं मिलने का मुख्य कारण यही है।

अकेले बैठ कर सोचना!

ऐसा क्यूँ?

हम नकारात्मकतासे नहीं कहते है, सकारात्मकको तरफ परिवर्तन के लिये कहते है, यही हमारी शिक्षा है।

"Vibrant Pushti":

खिलते फूल से कह दिया

क्या पाया यूही खिल कर

हस कर कहे दिया फूलने

यही मुस्कान पायी तुम्हें कहने को

"Vibrant Pushti"

पंकज पंकज

पंकज पंकज

ऐसे जीवन सिंचना

जो पंक पंक से अमृत सींचे

धरे परम तत्व चरण में

धरे परम तत्व अंग में

तेरे दर्शन से दर्शन पाये हमने

दृष्टि को सौंदर्य दिया तुमने

सुंदरता से निकट किया तुमने

दर्शन से निकटता जगायी तुमने

साँवरिया से प्रीत बंधायी तुमने

"Vibrant Pushti"

साँवरिया ऐसी है तेरी याद जो बहे तन मन आत्म प्रेम धार

प्रीत रंग कमल से सजाया प्रियतम

नयन गुलाबी, मुखडा गुलाबी

होठों से निकली पुकार गुलाबी

बिखराये रंग गुलाबी खिला दिल गुलाबी

दिल से दिल मिलने का यह शृंगार गुलाबी

चरण छूये शरण पडे

कर दिया जीवन गुलाबी

"Vibrant Pushti"

"नृत्य"

संस्कृति दर्शाने का अदभुत साधन।

संस्कृति सदा संस्कृत या ने संस्कार, शिक्षा, धर्म, भाव और ज्ञान को उद्भवता है। हमारी संस्कृति में नृत्य सदा मंदिरों में ही होता था। क्यूँ?

श्रीप्रभु से एकरुप होने, श्रीप्रभु के हृदयस्थ भाव समझने, हममें जागृत होते भाव को संयोजित करने।

नृत्य कला आंतरिक भाव का संकेत स्वरूप है। हर संकेत सर्जनात्मक द्रढता कहती है।

यह द्रढता से जो जुडे वह तत्व से एकात्म हो जाता है।

नृत्य में हर प्रकार के रस प्रकट होते है, यही रस से "रसो वै स" श्रीप्रभु से प्रीत मिलन होता है। इसलिये ही मंदिर या सेवागृह में नृत्य करते थे।

"Vibrant Pushti"

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि राधा कृष्ण अंक - तृतीय

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "